ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

# शांतिधर्मी

दिसम्बर, 2013

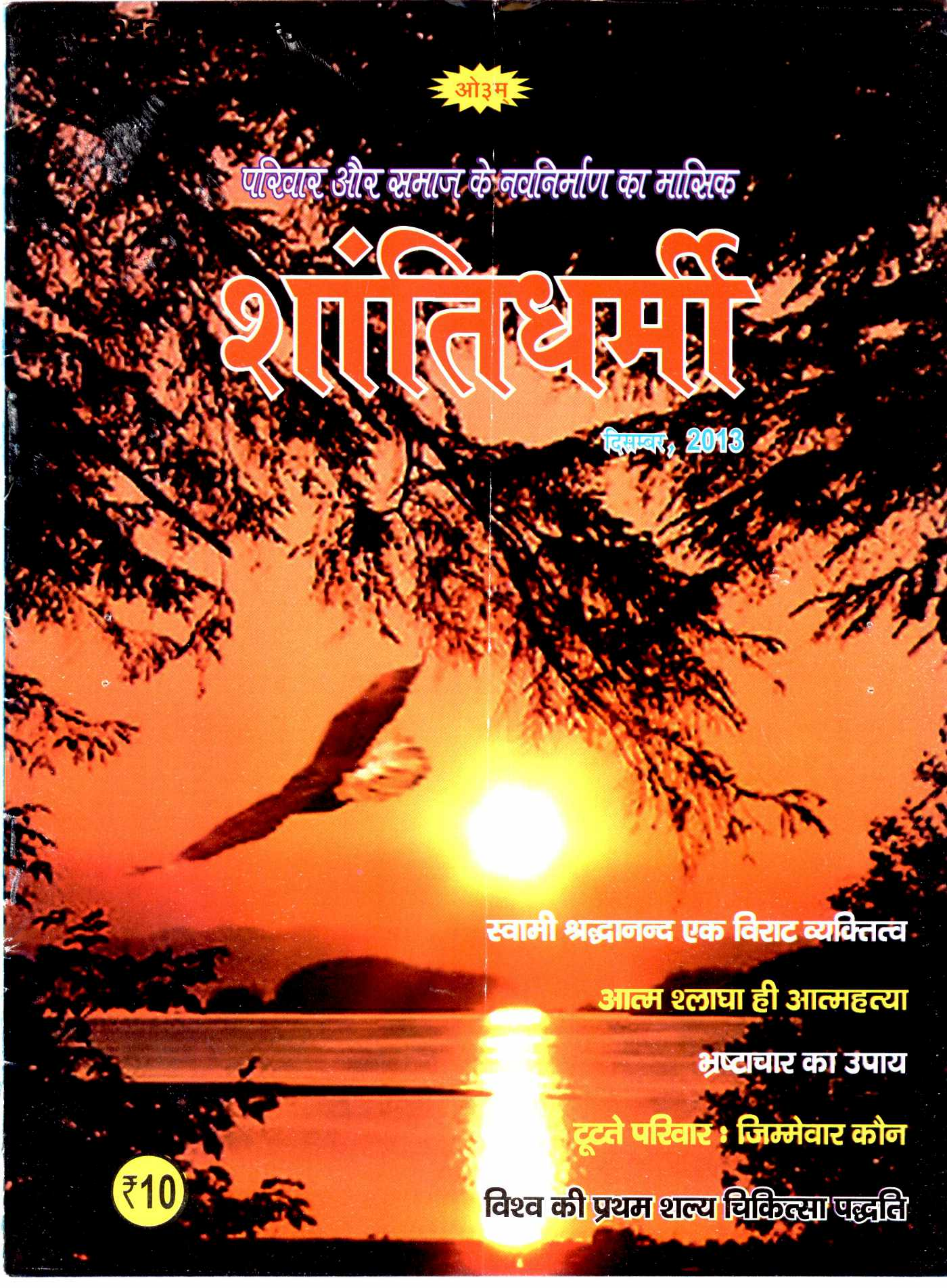

स्वामी श्रद्धानन्द एक विराट व्यक्तित्व

आत्म श्लाघा ही आत्महत्या

भ्रष्टाचार का उपाय

टूटते परिवार : जिम्मेवार कौन

विश्व की प्रथम शल्य चिकित्सा पद्धति

₹10

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

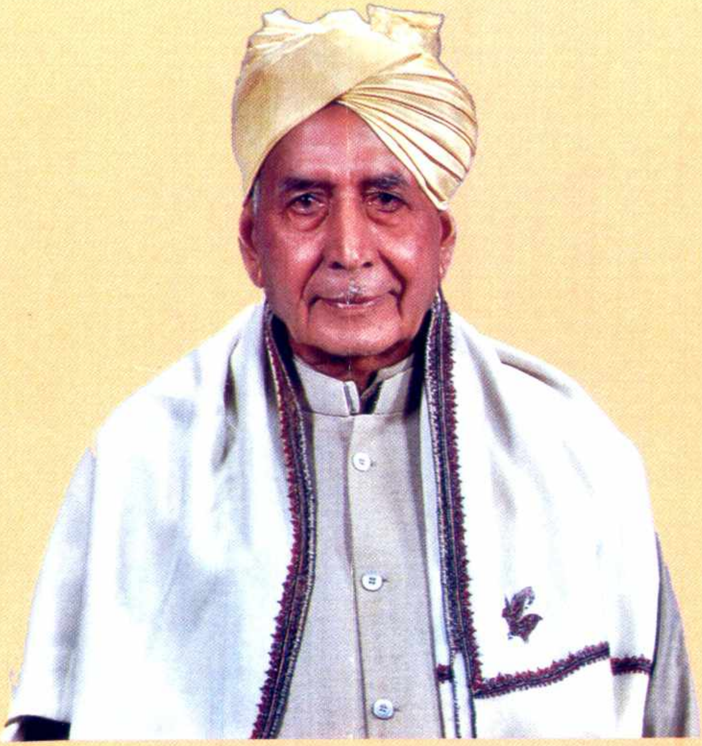

# वैदिक पथ के पथिक चौधरी मित्रसेन आर्य

**जन्म 15 दिसम्बर 1930** **देहावसान 27 जनवरी 2011**

हजारों परिवारों के उद्धारक
आर्यसमाज के निष्ठावान अनुयायी, समाज-सुधारक
कर्मयोगी, आर्य संस्थाओं के अनन्य सहयोगी,
उदारमना दानवीर, यज्ञमय जीवन के प्रतीक,
आत्मधन के धनी, परोपकारी दानशील, पारिवारिक,
आध्यात्मिक और सामाजिक जीवन के आदर्श, ईश्वर
विश्वासी, पुरुषार्थी, दृढ़ संकल्पी

**चौधरी मित्रसेन आर्य का क्रियात्मक जीवन हम सबके लिए प्रेरणास्रोत है**

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

# शान्तिधर्मी

दिसम्बर, २०१३

वर्ष : १५ अंक : ११ मार्गशीर्ष २०७०
सृष्टि संवत्-१९६०८५३११४, दयानन्दाब्द : १९०

सम्पादक : चन्द्रभानु आर्य
(चलभाष ०८०५९९-६४३४०)
संयुक्त सम्पादक : सहदेव समर्पित
(चलभाष ०९४१६२-५३८२६)
उपसम्पादक : सत्यसुधा शास्त्री
प्रबंध संपादक : सुभाष श्योराण
आदरी सम्पादक : यज्ञदत्त आर्य
सह-सम्पादक : राजेशार्य आट्टा
डॉ० विवेक आर्य
नरेश सिहाग बोहल
सहयोग : आचार्य आनन्द पुरुषार्थी
श्रीपाल आर्य, बागपत
महेश सोनी, बीकानेर
भलेराम आर्य, सांघी
कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी
विधि परामर्शक : जगरूपसिंह तंवर
कार्यालय व्यवस्थापक : रविन्द्रकुमार आर्य
कम्प्यूटर सज्जा : बिशम्बर तिवारी

मूल्य

| | | |
|---|---|---|
| एक प्रति | : | १०.०० रु० |
| वार्षिक | : | १००.०० रु० |
| आजीवन | : | १०००.०० रु० |

कार्यालय :
७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक,
जीन्द-१२६१०२ (हरियाणा)
दूरभाष : ६४१६२-५३८२६
ई-मेल-shantidharmijind@gmail.com

## प्रेरणा स्तम्भ

**कलह-कोलाहल में शान्ति कहाँ है? शांति के बिना सुख-समृद्धि जल-मरीचिका है।**

-पंण्डित चमूपति

## क्या? कहाँ?....

आलेख

| | |
|---|---|
| वर्तमान संदर्भ में स्वामी श्रद्धानन्द | ९ |
| स्वामी श्रद्धानन्द एक विराट् व्यक्तित्त्व | ११ |
| बेटियों को शिक्षित और शक्तिशाली बनाओ | १४ |
| आत्मश्लाघा आत्महत्या के समान है | १६ |
| ये महंगी शादियाँ | १८ |
| टूटते संयुक्त परिवार : कौन जिम्मेवार | १९ |
| योग साधना का पथ | २० |
| शंकर शंभु शिव को नमस्कार | २२ |
| विश्व की प्रथम शल्य चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद | २४ |
| दीक्षान्त को गाऊन की गुलामी से मुक्त करें (अन्ततः) | ३४ |

कहानी/प्रसंग : सीख हम सीखें युगों से-८, निर्भयता का आदर्श १५, लकड़ी का कटोरा-२७, शेर या लोमड़ी- २८

कविताएँ- १०, १४, २७

स्तम्भ-आपकी सम्मतियाँ ५, अनुशीलन, सोम सरोवर ६ चाणक्य नीति, अमृतवचनावली ७, बाल वाटिका २६, भजनावली २९ समाचार सूचनाएँ, साथ में : निराले आर्य प्रचारक, संकल्प का बल

## वेद-विचार

### सामवेद आग्नेय पर्व

पद्यानुवाद : स्व० आचार्य विद्यानिधि शास्त्री

**प्रत्यग्ने हरसा हरः शृणाहि विश्वतस्परि।**
**यातुधानस्य रक्षसो बलं न्युब्ज वीर्यम्।।९५।।**

अपने प्रबल तेज से भगवान्! उच्छृंखल खल को दल दो।
राक्षस का बल वीर्य कुचल दो, शुभकर्मों का शुभ फल दो।।
क्रोध लोभ मोहादि भयंकर शत्रु हमें जब तंग करें।
आप उसी क्षण दिव्य ओज से उन सब का बल भ्रग करें।।

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

www.thearyasamaj.org



# भ्रष्टाचार का उपाय

❑ चन्द्रभानु आय

पिछले दिनों में भ्रष्टाचार के मुद्दे पर हमने सरकारों को बनते बिगड़ते देखा है। भ्रष्टाचार के विरुद्ध बनने वाले कानूनों पर भी रोचक बहस के हम साक्षी रहे हैं। किसी को इस कानून में कोई कमी नजर आई है तो किसी को यह पूरा कानून ही कमजोर नजर आया है। अन्ना जी के आन्दोलन के बाद से ऐसा लगने लगा कि पूरा देश इस से तंग आ चुका है और इसका निदान चाहता है। भ्रष्टाचार किसी भी राष्ट्र की पूरी व्यवस्था को पंगु बना देता है और इसके विरुद्ध कड़ा कानून होना ही चाहिए। लेकिन कोई भी कानून सार्थक तभी होता है जब उसको लागू करने वाले लोग पक्षपात रहित और न्यायपूर्ण आचरण करने वाले हों। जब भ्रष्ट आचरण करने वाले लोगों के हाथ में सत्ता की शक्ति हो तो वे कोई न कोई छिद्र निकाल ही लेते हैं और कानून का दुरुपयोग होने लगता है।

यह जो बहस हो रही है यह सार्वजनिक जीवन के भ्रष्टाचार के बारे में हो रही है। जबकि भ्रष्टाचार का मूल व्यक्ति के जीवन में है। भ्रष्टाचार भी केवल सार्वजनिक धन का व्यक्तिगत हितों के लिए प्रयोग ही नहीं है अपितु हर प्रकार का असत्य व्यवहार भ्रष्टाचार है। अर्थशुचिता तो उसका एक अंश मात्र है। चरित्रशुचिता क़े अन्दर ही अर्थशुचिता भी आ जाती है। व्यक्ति का चरित्र स्वयं के कल्याण के लिए तो पवित्र होना ही चाहिए, सार्वजनिक पद पर बैठे हुए व्यक्ति का चरित्र तो पूरे समाज के चरित्र को प्रभावित करता है। पिछले दशकों में हमारे देश में प्रोफेशनल्स की ऐसी फौज तैयार करने पर बल दिया गया है, जिनका उद्देश्य केवल व्यावसायिक सफलता है चाहे उसके लिए किसी भी साधन का उपयोग करना पड़े। हमारी संस्कृति की मूल सोच यह है कि साध्य की प्राप्ति के साधन भी पवित्र होने चाहिएँ। पिछले दशकों मे ही ऐसा वातावरण भी बनाया गया है कि हमें व्यक्ति के निजी जीवन की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए। वह सार्वजनिक उन्नति में कितना योगदान कर रहा है, यही देखना चाहिए। जबकि हमारी परम्परा रही है 'यथा राजा तथा प्रजा' हमारे यहाँ लोग नेताओं को अपने आदर्श मानते रहे हैं। उनके व्यक्तिगत जीवन का सामाजिक जीवन पर प्रभाव पड़ता ही है। सार्वजनिक पद पर आने के बाद व्यक्ति का दायित्त्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि उसका जीवन अब व्यक्तिगत तो रहा ही नहीं, लोग उसके हर आचरण पर गहरी नजर रखते हैं।

व्यक्तिगत जीवन से ही सार्वजनिक जीवन का निर्माण होता है। व्यक्ति ही समाज बनाते हैं और व्यक्तियों में से ही कुछ लोग अन्य लोगों के लिए आदर्श का काम करते हैं। जब तक व्यक्ति के जीवन में असत्य व्यवहार रहेगा तब तक सार्वजनिक जीवन में असत्य व्यवहार को नहीं रोका जा सकता। कानून के द्वारा उस पर केवल कुछ सीमा तक अंकुश लगाया जा सकता है, उसे समाप्त नहीं किया जा सकता। यह अंकुश भी केवल तभी संभव है जब उस कानून में छिद्र न हों और उसको लागू करने वाले पक्षपातरहित हों। सार्वजनिक जीवन से भ्रष्टाचार की समाप्ति तो तभी संभव है जब व्यक्ति के जीवन में सत्य व्यवहार लागू करने के प्रयास किये जाएँ। फिर भी जो दृढ़ कुसंस्कारी अपराधी बचें उन के लिए दण्ड-व्यवस्था सफल हो सकती है।

धार्मिक और नैतिक शिक्षा के अभाव में व्यक्ति के जीवन में असत्य आचरण बढ़ रहा है। परिवार में ही एक दूसरे का विश्वास नहीं है। पति पत्नी से बचाकर पैसे रखना चाहता है, पत्नी पति से छुपाकर। बच्चे अलग पैसे बचाते हैं। व्यक्ति कोई अनुचित कार्य करता है तो उसे दूसरों से छुपाता है। वह वैसा दिखना चाहता है जैसा वह है नहीं। लेकिन दूसरों को दिखना चाहता है। यदि व्यक्ति को सच्ची आस्तिकता के संस्कार दिए जाएँ- यदि व्यक्ति परमात्मा को सर्वव्यापक और अपने आत्मा में भी उपस्थित मान कर व्यवहार करे तो उसे दूसरों से छुपाने की अपेक्षा स्वयं से छुपाने की चिन्ता अधिक होनी चाहिए। जो परमात्मा हमारे कर्म करने से भी पहले संकल्प मात्र होने से जान लेता है, उससे छिपा सकते हैं तो छिपकर अपवित्र आचरण अवश्य करना चाहिए। औरों को पता लगे कि हम बुरे हैं तो इससे हानि होगी-- अपयश होगा-- लेकिन इससे भी अधिक हानि अपने आत्मा में पड़ने वाले कुसंस्कारों से होगी। ईश्वर से छुपकर कोई कर्म किया नहीं जा सकता और ईश्वर पक्षपातरहित न्यायकारी है अर्थात् उस कर्म के फल से भी नहीं बचा जा सकता। ऐसी शिक्षा बालकपन से ही दी जाए तो व्यक्ति के जीवन से असत्य आचरण दूर हो सकता है। कैसे मुंशीराम ने मांसाहार और अन्य बुराईयों का त्याग किया और स्वामी श्रद्धानन्द बन गए! कैसे फूलसिंह पटवारी ने लोगों से ली गई रिश्वत घर-घर जा कर लौटा दी! और भगत फूलसिंह बन गए! ये बातें यदि पाठ्यक्रमों में पढ़ाई जाएँ तो निश्चय ही भ्रष्टाचार की समस्या का समाधान हो सकता है। कानून कितना भी सख्त क्यों न हो, उससे व्यक्ति के जीवन को नहीं बदला जा सकता।

www.thearyasamaj.org

# आपकी सम्मतियाँ

शांतिधर्मी का नवम्बर अंक मिला। सम्पादकीय दीपावली के अर्थ को जीवन दर्शन के नए तरीके से समझाने में सफल रहा। दीपावली का यह दर्शन है कि बांट कर खाओ। गुरु नानक देव जी ने भी यही कहा है-'किरत करो, अते वंड के खाओ।' दीपावली का यह सचमुच अनूठा संदेश है। चाणक्य नीति विचारणीय रही। डॉ० रामभगत लांगायन रचित अमृत-वचनावली ज्ञानवर्धक तथा शिक्षाप्रद है। डॉ० विवेक आर्य का 'सीख हम सीखें युगों से' सचमुच मार्गदर्शक रहा। पं० जगेदवसिंह सिद्धान्ती तथा रामफलसिंह आर्य के लेख ज्ञानवर्धक तथा दीपावली के त्यौहार को बढ़िया वैकल्पिक तरीके से मनाने का सन्देश देते हैं। श्री सहदेव समर्पित का लाजवाब लेख 'प्रत्येक मनुष्य को अग्निहोत्र अवश्य करना चाहिए' होम के लाभ बताने वाला है। हम लेखक के इस मत से सहमत हैं कि हवन करने से पर्यावरण स्वच्छ होता है, परिवार तथा समाज में एकता, सामंजस्य तथा माधुर्य बना रहता है। डॉ० नरेन्द्र आहुजा क्षमा के बारे में सच ही कहते हैं- क्षमा तेजस्वी सक्षम लोगों का गहना है। बाल वाटिका के हास्यम्, बालकविता ओर प्रेरक प्रसंग अच्छे लगे।

**प्रो० शामलाल कौशल**
९७५-बी/२०, ग्रीन रोड, रोहतक-१२४००१

## डॉ0 प्रशस्यमित्र शास्त्री को 'राष्ट्रपति सम्मान'

आर्य जगत् के प्रख्यात विद्वान एवं संस्कृत भाषा के कवि एवं कथाकार डॉ० प्रशस्यमित्र शास्त्री को इस वर्ष स्वाधीनता दिवस के अवसर राष्ट्रपति सम्मान प्रदान करने की घोषणा की गई है। इस सम्मान में सम्मान पत्र के साथ ही शॉल एवं ५ लाख रुपए की धनराशि भेंट की जाती है। श्री शास्त्री को संस्कृत भाषा के लिए प्रख्यात साहित्य अकादमी सम्मान भी प्रदान किया जा चुका है। यह समस्त आर्यजगत् के लिए गर्व का विषय है। शांतिधर्मी की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामना।

शांतिधर्मी केवल मासिक पत्रिका ही नहीं, यह तो संस्कार निर्माण का आन्दोलन है।

**अश्विनी कुमार रुहिल**
छोटूराम किसान कालेज, जींद-१२६१०२

शांतिधर्मी के नवम्बर अंक में हर बार की तरह ज्ञानवर्धक सामग्री पढ़ने को मिली। प्रेरक प्रसंग 'संगति का प्रभाव' व 'खुशी मिलती है' ने प्रभावित किया। 'बुद्धिमान कौन?' प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि प्रयत्न और मेहनत भी तभी सफल होते हैं जब वे सही दिशा में किये जाएँ। 'वही मिलता है।' कहानी बताती है कि हमें दूसरों से शिकायत करने से पहले अपने व्यवहार को सुधारना चाहिए।

**ओमदत्त आर्य**
गली सुनारों वाली, रेलवे रोड रोहतक-१२४००१

# निराले आर्य प्रचारक : श्रीपाल आर्योपदेशक वैदिक मिशनरी

❑ रामपाल सिंह राणा, प्रवक्ता, निरपुड़ा (बागपत) उ०प्र०

मैं गत दिनों अपनी एक रिश्तेदारी में एक वार्षिक यज्ञ के आयोजन पर गया हुआ था। वहाँ मेरे पूर्व परिचित महाशय श्रीपाल आर्य उपदेशक गाँव-खेड़ा हटाना (बागपत) से मिलकर और उनके सुन्दर विचार, विशेष कर महिलाओं को समझाने की शैली देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

आज ८० वर्ष की आयु में भी आप देव दयानन्द के सैद्धान्तिक विचारों को फैलाने में पूरा-पूरा यत्न कर रहे हैं। मैं आपको सुखद एवं दीर्घायु की प्रभु से कामना करता हूँ। आपने ही मुझे अजमेर से लाकर कई हजार रुपए का वैदिक साहित्य उपलब्ध कराया है। मैं शान्तिधर्मी का आजीवन सदस्य इन्हीं के द्वारा बनाया गया हूँ।

सचमुच आपको चलता-फिरता आर्यसमाज कहा जाये तो अत्युक्ति नहीं है। मैं पिछले कुछ वर्षों से आर्य जी से परिचित हूँ। आप दयानन्द के सच्चे सिपाही हैं। आप प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी भीष्म जी के शिष्य हैं। आप सदैव अपने कार्यक्रम से पूर्व एक दोहा सुनाते हैं :-

न मैं कोई बड़ा वक्ता सुनो और ना गायक भाई हूँ।
मैं तो दयानन्द की सेना का छोटा सा सिपाही हूँ।।

मेरी सभी आर्यजनों एवं आर्यसमाज के अधिकारियों से प्रार्थना है कि आप ऐसे निर्भीक एवं क्रान्तिकारी आर्य समाज प्रचारक को अपने यहाँ बुलाकर सम्मानित करने कृपा करें।

www.thearyasamaj.org



गायत्री छन्दः । षड्ज स्वरः

# विप्र का आक्रमण

पं० चमूपति जी

पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः।
शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः।।२।।

ऋषिः -अमहीयुः = पृथिवी की नहीं, द्युलोक की उड़ान लेने वाला

**विचर्षणिः**= तत्त्वदर्शी ने, **पुनानः** =पवित्रता का प्रचार करते-करते, **विश्वाः मृधः**= सभी संघर्षों-सब प्रकार के संग्रामों पर, **अभि अक्रमीत्**= धावा बोल दिया। प्रजाएँ **धीतिभिः**=कर्म तथा ज्ञान द्वारा, **विप्रम्**= इस मेधावी जन का, **शुम्भन्ति**= अभिनन्दन करती हैं।

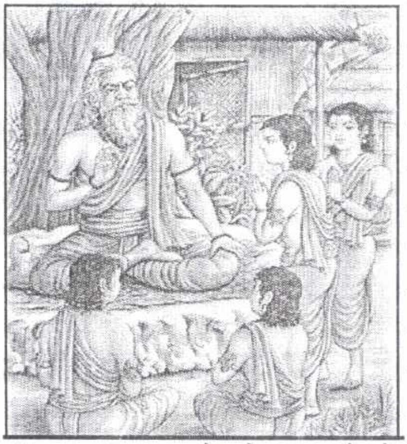

संसार संघर्ष का घर हो रहा है। राजा का प्रजा से, पिता का संतान से, पुरुष का स्त्री से, पूंजीपतियों का मजदूरों से संघर्ष ही संघर्ष हो रहा है। सब ओर से अधिकार-अधिकार की पुकार सुनाई दे रही है। विकासवादी कहता है- जीवन का मर्म संग्राम है। इसी से उत्तरोत्तर उन्नति=उत्क्रान्ति होती है। पशु-पशु के साथ, मनुष्य-मनुष्य के साथ जुट रहा है-जूझ रहा है। विकासवादी का कथन है- इससे लाभ होगा, उत्तरोत्तर विकास होगा।

जातियाँ जातियों पर, राष्ट्र राष्ट्रों पर गोले बरसा रहे हैं। जल से, थल से, आकाश से, पाताल से गोलों की वर्षा हो रही है। शक्तिवादी कहता है- इस प्रक्रिया से अतिमानव (देव) पैदा होगा। तत्त्वदर्शी ऋषि जिसने आत्मा का दर्शन किया है, वह न विकासवादी से सहमत है न शक्तिवादी से। उसकी दृष्टि में प्रभु की सृष्टि के विकास का सूत्र प्रेम है, सहयोग है, दया और उपकार है। संसार में आत्मा की उन्नति की- उत्क्रान्ति की-यही सीढ़ियाँ हैं।

राजा प्रजाजनों को ही राज्य दे दे। इससे वह राजाओं का राजा- महाराजा बन जाएगा। पूंजीपति श्रमियों को अपने लाभ का हिस्सेदार बना दे--ऐसा करने से वह उनसे अधिक काम ले सकेगा। स्त्री-पुरुष के सहयोग से गृहस्थ चलेगा, मानव जाति की वृद्धि होगी, सुख सम्पत्ति की उन्नति होगी। जातियों के मेल से सम्पूर्ण मानव-जाति का उद्धार होगा। जो शक्ति आज जन-क्षय में लग रही है, वह अभ्युदय में लगाई जाएगी। ऋषि दयानन्द का चक्रवर्ती राज्य का सपना यही था। कलह- कोलाहल में शान्ति कहाँ है? शांति के बिना सुख-समृद्धि जल-मरीचिका है। प्रभु का प्यारा अपने स्वाभाविक स्नेह से संसार को स्नेहमय बना डालता है। वह समाज की अन्यायपूर्ण विषमताओं को मिटाता है। राष्ट्र को एक नए ढांचे में ढालता है। समाज का विभाग गुण-कर्म के अनुसार कर जन्माभिमानियों के अत्याचार को दूर करता है। वह लोगों को कर्त्तव्य परायण बनाता है। इन्हें कृतज्ञता सिखाता है। लोग अपनी त्रुटियों को देखते हैं और विनम्र हो जाते हैं। भक्त लोकसेवा की गंगा बहा देते हैं। उसमें स्नान कर जी नहीं अघाता।

ऐसे प्रेम के पुतले का सत्कार जनता की उठती हुई आशाएँ, फैली हुई भुजाएँ, उन्मुख-नयन, गान गा रहे कण्ठ करते हैं। सर्व-साधारण के आचार-विचार पर उस तत्त्वदर्शी के संदेश की छाप पड़ जाती है। वही उसका सच्चा क्रियात्मक अभिनन्दन है। राम का, कृष्ण का अभिनन्दन इसी प्रकार हुआ था। और ऋषि दयानन्द का?

www.thearyasamaj.org

# चाणक्य-नीति

पंचमोऽध्यायः

वृथा वृष्टि समुद्रेषु,
वृथा तृप्तेषु भोजनम्।
वृथा दानं धनाढ्येषु,
वृथा दीपो दिवाऽपि च।।१६।।

समुद्र में वर्षा व्यर्थ है। जिनका पेट भरा है, उनको भोजन कराना व्यर्थ है। धनवानों को दान करना व्यर्थ है। दिन के प्रकाश में दीपक जलाने का कोई लाभ नहीं है।

नाऽस्ति मेघसमं तोयं नाऽस्ति चात्मसमं बलम्।
नाऽस्ति चक्षु समं तेजो नाऽस्ति धान्यसमं प्रियम्।।१७।।

बादल के जल के समान उपयोगी जल और कोई नहीं है। आत्मिक बल के समान बल नहीं है। जो तेज नेत्रों से प्रकट होता है वह अन्य किसी प्रकार से प्रकट नहीं होता। प्राणियों के लिए अन्न से बढ़कर कोई अन्य प्रिय वस्तु नहीं है।

अधना धनमिच्छन्ति वाचं चैव चतुष्पदाः।
मानवाः स्वर्गमिच्छन्ति मोक्षमिच्छन्ति देवताः।।१८।।

निर्धन व्यक्ति धन की कामना करते हैं। पशु चाहते हैं कि उनके पास वाणी हो। मनुष्य स्वर्ग= विशेष सुख चाहते हैं, लेकिन देवता मोक्ष की कामना करते हैं।

सत्येन धार्यते पृथिवी सत्येन तपते रविः।
सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्।।१९।।

सत्य= सत्यस्वरूप परमात्मा अथवा उसके सत्य नियमों के आधार पर ही यह पृथिवी टिकी हुई है। सत्य से ही सूर्य तपता है। सत्य से ही वायु चलता है। सब कुछ सत्य के आधार पर ही अवस्थित है। परमात्मा के नियमों में बंधा हुआ है।

# अमृत वचनावली

## प्रीतिशतकम्

❑डॉ॰ रामभक्त लांगायन
आई ए एस (सेवानिवृत्त)

नायमन्वेषणीयोऽस्ति मनोमन्दिरसंस्थितः।
निर्भयो निरहंकारः प्राप्नोत्येनमसंशयम्।।८८।।

परमात्मा कोई ढूंढ़ने की वस्तु नहीं है जिसे खोजा जाए। परमात्मा उसे मिलता है जिसने अपने आप को मिटा दिया है। और जो झुक गया है, जिसका अहंकार समाप्त हो गया है।

सर्वमीशकृपासाध्यमसाध्यं नास्ति किंचन।
परं तस्य कृपा सर्वं परित्यज्यानुभूयते।।८९।।

प्रभु की कृपा के बिना कुछ भी नहीं होता, लेकिन वह उसे अनायास नहीं मिलता। जिन्होंने उसे प्राप्त करने के लिए सब कुछ दाव पर लगा दिया है और कुछ भी शेष नहीं बचाया, ऐसी व्यक्ति पर ही प्रभु कृपा होती है।

नाकृतिर्न च वर्णोऽस्ति रूपं वा परमात्मनः।
सर्वथा प्रेमरूपोऽसौ प्रेमगम्य प्रियः प्रभुः।।९०।।

परमात्मा का कोई आकार व रंग रूप नहीं है। प्रेम उसका रंग है। प्रेम उसका ढंग है। प्रेम ही उसकी छवि है। जिसने प्रेम को पहचान लिया है, उसे परमात्मा जड़ चेतन में सब जगह नजर आने लगता है।

रवेर्भा सुमनोगन्धः, कान्तारूपं, शिशो स्मितम्।
सर्वं भगवतो ज्ञात्वा विनम्रस्तद्गतो भव।।९१।।

फलों की गंध, सुन्दर स्त्री का सौन्दर्य, बच्चे की खिलखिलाहट, सूर्य की रोशनी-- यह सब कुछ उसी का है। जो ऐसा मानकर उनके सामने झुक जाते है, उनका अहंकार समाप्त हो जाता है। ऐसे व्यक्तियों में परमात्मा स्वयं झांकता है।

अन्तस्थममृतं त्यक्त्वा विषमन्विष्यते बहिः।
अमृतं रोचते नास्यै विषं खादति दुर्भगा।।९२।।

जो भीतर रमने वाले अमृत को छोड़कर बाहरी विष को खोजते हैं, वे दुःख पाते हैं, ऐसे व्यक्तियों को अमृत अच्छा नहीं लगता और विष ऐसे दुर्भाग्यशाली व्यक्तियों को खा जाता है।

www.thearyasamaj.org

## सीख हम सीखें युगों से

❒डॉ० विवेक आर्य

### स्वामी श्रद्धानन्द एवं वैदिक संस्कार

महात्मा मुंशीराम एवं कुछ अन्य सज्जनों के सहयोग से कपूरथला में 1894 में आर्य समाज की स्थापना हुई।

पहले पहल आर्यसमाज की कार्य लाला अमरनाथ सरना जी की दुकान पर होता थी। शहर का कोतवाल सदैव लाला जी को तंग करने की मंशा से पीछे पड़ा रहता था और उन्हें धमकी तक दे डालता था कि अगर प्रचार किया तो किसी न किसी दिन जेल जाना पड़ेगा। कुछ काल पश्चात सुल्तानपुर में आर्यसमाज के लिए एक भवन किराये पर ले लिया गया एवं साप्ताहिक सत्संग वहीं लगने लगा। 1910 में आर्यसमाज के मंदिर का भी निर्माण हो गया। 1924 में इसी समाज मंदिर में स्वामीजी द्वारा सैकड़ों हरिजनों को आर्यसमाज में शामिल किया गया था।

इस समाज की दो घटनाएँ प्रसिद्ध हैं।

1901 में लाला अमरनाथ सरना जी की माता जी का देहांत हो गया। उन्होंने अपनी माता जी का दाह संस्कार वैदिक रीति से करने की घोषणा कर दी। इस समाचार को सुनते ही नगर में हलचल मच गई। लाला जी के घर पर पुलिस आ गई और कहा कि यदि आपने वैदिक रीति से संस्कार किया तो आपको जीवन भर कारागार में रहना पड़ेगा। यह समाचार जालंधर और लुधियाना के समाजों तक फैल गया। महात्मा मुंशीराम जी कई अन्य आर्यों के साथ सायं चार बजे लाला जी के यहाँ पर पहुँच गये। अर्थी उठाई गई और बाज़ार में लाई गई। कोतवाल ने अर्थी को रोक लिया। महात्माजी ने झट कहा- आपने किस विधान से अर्थी को रोका हैं? क्या आपको यह नहीं मालूम कि अर्थी को रोकना मना हैं? यह सुनकर कोतवाल पीछे हट गया। इतने में बाज़ार से लेकर शमशान भूमि तक पुलिस ने घेराबंदी कर दी। अर्थी के शमशान में पहुँचने के समय वहाँ पर पर्याप्त पुलिस की पलटन थी। रियासत के सब एहलकार लोग हाथियों पर चढ़कर इस संस्कार को देखने आये थे। दर्शक लोग वहाँ पर सैकड़ों की संख्या में उपस्थित थे। दाह संस्कार विधिपूर्वक सम्पन्न हो गया। संस्कार के पश्चात् पौराणिक पंडितों ने आर्यसमाज के सदस्यों का सामाजिक बहिष्कार कर दिया। आर्यों के लिए खाने-पीने का सामान दो माह तक जालंधर से आता था।

इसी प्रकार लाला बुटामल सराफ की माता जी का भी उनकी अनुपस्थिति में देहांत हो गया। उनके सम्बन्धियों ने पौराणिक रीति से उनकी माता जी का संस्कार कर दिया। जब वे वापिस लौटे तो उन्हें अत्यंत खेद हुआ। उन्होंने शमशान से राख को एकत्र कर उसका वैदिक रीति से संस्कार सम्पन्न किया।

इन घटनाओं से न केवल उस काल में आर्यों द्वारा किस प्रकार से सामाजिक विरोध को सहा गया उसका विवरण मिलता है, अपितु ऐसे संकट काल में महात्मा मुंशी राम द्वारा किस प्रकार से आर्यों का मनोबल बढ़ाया गया इसका भी विवरण मिलता है।

महात्मा मुंशी राम जी के भागीरथ प्रयास से ही उत्तर भारत विशेष रूप से पंजाब में गली गली में आर्यों का निर्माण हुआ जिनके सहयोग से ही महात्मा जी गुरुकुल कांगड़ी जैसी वैभवशाली क्रांतिकारी संस्था का निर्माण करने में सक्षम हुए थे।

सन्दर्भ- आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का सचित्र इतिहास- पंडित भीमसेन विद्यालंकार

आर्यसमाज के अनन्य प्रचारक महाशय चिरंजीलाल ने 19 वर्ष की आयु में 1877 में स्वामी दयानंद के दर्शन लुधियाना में किये थे। तभी से आपने वैदिक धर्म का प्रचार करने की ठान ली थी। पर एक तो आपका विवाह हो चुका था, ऊपर से आपके पिताजी की मृत्यु होने से घर का सारा बोझ आपके कंधों पर आ चुका था। 10-12 वर्ष तक आपने किसी प्रकार धैर्य किया और दुकानदारी से कुटुम्ब का भरण पोषण करने लगे। जब छोटा भाई कार्य भार सँभालने योग्य हो गया तो आप प्रचार कार्य में निकल पड़े। इनके प्रचार का साधन इन्हीं की बनाई हुई पंजाबी की सी हर्फियाँ होती थीं। उन्हें ये उर्दू में छपवा लेते और गा-गा कर उनका प्रचार करते थे। आप पर एक अभियोग भी चला जिसमें आपको 4 मास की सजा हुई और 50 रुपये का दंड मिला। आपके लिए महात्मा मुंशीराम ने अपील की जिससे आप छूट गए पर कुछ काल तक आपको जेल में रहना पड़ा था। कारावास की कहानी करुणाजनक है। इस कारावास ने आपके प्रचार को द्विगुणित कर दिया। संगठन निर्माणकर्ता वही बन सकता है जो अपने सहयोगियों के दु:ख और दर्द में उनका साथ दे।

www.thearyasamaj.org



# वर्तमान संदर्भ में स्वामी श्रद्धानन्द

❒ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' 502 जी एच 27 सैक्टर 20 पंचकूला मो० 09467608686

यदि सही मायनों में स्वामी श्रद्धानंद को सच्ची श्रद्धांजलि उनके सर्वोच्च आत्म बलिदान पर देनी है तो उनके जीवन से प्रेरणा लेकर संघर्ष के लिए तत्पर होना होगा और वर्तमान समय में देश काल वातावरण में बने निराशा के माहौल में आशा की किरण बनकर समाज को नेतृत्व प्रदान करना होगा।

स्वामी श्रद्धानन्द एक विलक्षण एवं बहुआयामी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व थे। हम जब भी कभी किसी ऐसे इतिहास प्रसिद्ध महामानव को श्रद्धांजलि दें तो हमारा कर्तव्य बन जाता है कि हम उनके जीवन के उज्ज्वल पक्षों से प्रेरणा लें और वर्तमान समय की समस्याओं पर उनकी उपयोगिता को देखें। इतिहास के स्वर्णाक्षरों में अंकित इन प्रकाश स्तंभों से अपना मार्ग प्रशस्त करके ही हम वर्तमान की समस्त समस्याओं का निराकरण करते हुए भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। आईये इस महामानव के जीवन के विभिन्न आयामों की वर्तमान संदर्भों में समाज एवं राष्ट्र में उपयोगिता पर चर्चा करते हैं।

**महर्षि दयानंद के मानस पुत्र :**

जैसे पारस के संपर्क में आकर लोहा भी स्वर्ण बन जाता है, उसी प्रकार मुंशीराम पर महर्षि दयानंद के वर्ष १८७९ में बरेली में दिये प्रवचन का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानंद बन गए। अब हम विचार करें कि विश्व की सर्वोत्कृष्ट वैदिक आर्य विचारधारा और महर्षि दयानंद द्वारा दिए आर्य सिद्धांतों पर चलने का संकल्प लेकर क्या हम स्वयं को सच्चा आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बना पाए! एक इकाई के रूप में यदि हम सुधरेंगे तो जग सुधरेगा।

**गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के संस्थापक :**

स्वामी श्रद्धानंद ने अपना सर्वस्व आहुत करके मुलतान, कुरुक्षेत्र, इन्द्रप्रस्थ, मटिन्डु, रायकोट, लुधियाना, सूपा गुजरात में आर्य पद्धति के अनुरूप चलने वाले गुरुकुलों की स्थापना की थी। शिक्षक राष्ट्र के भविष्य का निर्माता होता है और विद्यार्थियों के रूप में बच्चों को देशप्रेम, ईमानदारी और मानवीय गुणों से भरकर एक अच्छे आर्य नागरिक के रूप में तैयार करता है। स्वामी श्रद्धानंद ने भी गुरुकुलों में स्वतंत्रता सेनानियों, क्रान्तिकारियों, वैचारिक बमों के रूप में ब्रह्मचारियों को तैयार किया था। आज आजाद भारत में हमने गुलामी की प्रतीक- मात्र क्लर्क बनाने वाली मैकाले की शिक्षा पद्धति को अपना लिया है जिससे डाक्टर, इंजीनियर, मैनेजर, क्लर्क तो बन रहे हैं पर अच्छे आर्य मनुष्यों का निर्माण नहीं हो पा रहा। इस भौतिकतावादी युग में अंतिम सांसें ले रहे गुरुकुलों को आर्थिक सहायता देकर जीवित रखना होगा साथ ही डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओं को आन्दोलन के रूप में चलाकर विद्यार्थियों में आर्य संस्कार कूट-कूट कर भरने होंगे ताकि भविष्य के राष्ट्र की बुलंद इमारत में प्रयोग आने वाली यह मजबूत ईंटें बन सकें।

**नारी शिक्षा के पक्षधर :**

स्वामी श्रद्धानंद ने वर्ष १९२३ में दरियागंज में एक कोठी लेकर कन्या गुरुकुल की स्थापना की जो बाद में देहरादून स्थानान्तरित हो गया। उस समय लड़कियों को पढ़ने पढ़ाने का अधिकार नहीं था। आज नारी शिक्षा की अनुमति तो है लेकिन समाज में लड़कियों के साथ आज भी भेदभाव किया जाता है। पुरुष प्रधान समाज की संकीर्ण मानसिकता में नारी पर निरन्तर अत्याचार हो रहे हैं। नारी के प्रति अपराध लगातार बढ़ रहे हैं। आज आर्यसमाज को आगे आकर नारियों को समानता का अधिकार दिलवाने का संघर्ष करना होगा। नारी पर अत्याचार, अपराध की इस पराकाष्ठा के समय आधी आबादी आंदोलन के लिए तैयार है। आवश्यकता केवल आगे आकर कुशल नेतृत्व देने की है। इस समय आवश्यकता इस बात की है कि आर्य नेता आगे आकर इस आंदोलन को नेतृत्व प्रदान करते हुए सही दिशा दें। अन्यथा यह नारी विमर्श के आंदोलन दुधारी तलवार हैं जो इस नारी मुक्ति संघर्ष को नग्नता की तरफ भी ले जा सकते हैं।

**निर्भीक निष्पक्ष पत्रकार :**

स्वामी श्रद्धानंद ने पत्रकारिता के क्षेत्र में निर्भीकता निष्पक्षता के नए मापदंड स्थापित करते हुए सद्धर्म प्रचारक, द लिबरेटर का प्रकाशन किया। अर्जुन व दैनिक तेज में

www.thearyasamaj.org

पाखंडों, कुरीतियों, अंधविश्वासों पर तीखे प्रहार करते उनके लेख अत्यंत लोकप्रिय थे। आज वर्तमान आर्य पत्र-पत्रिकाओं को अपना प्रचार प्रसार आम जनता तक बढ़ाना होगा ताकि तेजी से बढ़ रहे गुरुडमवाद और पाखंडों से त्रस्त समाज को मुक्ति दिलवा सकें और आर्य-लेखकों को भी 'गर्म लोहा पीट ठंडा पीटने को वक्त बहुतेरा पड़ा है' की तर्ज पर वर्तमान समस्त समस्याओं के वैदिक समाधान प्रस्तुत करने होंगे।

**सामाजिक समरसता के प्रतीक :**

स्वामी श्रद्धानंद ने अपनी पुत्री अमृतकला का अन्तर्जातीय विवाह डॉ॰ सुखदेव के साथ किया तथा अपने पुत्रों हरीशचंद्र और इन्द्र के भी अन्तर्जातीय विवाह किए। वर्तमान काल में सत्ता प्राप्ति के स्वार्थ के वशीभूत भारतीय समाज को जातियों के वोट बैंकों में विभाजित करके जाति गत संघर्षों के बढ़ावा देने वाले कुटिल नेताओं से समाज को बचाने का कार्य केवल आर्यसमाज ही कर सकता है। इस समय पहले अपने सभी अन्तर्विरोधों को भूलकर पूरे समाज को आर्य बनाकर 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' का उद्घोष लगाकर 'संगच्छध्वं' की भावना से कार्य करना होगा।

**दलितोद्धारक :**

स्वामी श्रद्धानंद अस्पृश्यता और छुआछूत को आर्य जाति के माथे का कलंक मानते थे और १९१३ में दलितोद्धारक सभा की स्थापना की। अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन में छुआछूत के विरोध में प्रस्ताव रखा। आज यदि हम धर्म परिवर्तन रोकना चाहते हैं तो दलितों को समाज में बराबरी का स्थान देकर गले लगाना होगा और अपने इन भाईयों को अपना घर छोड़कर जाने से रोकना होगा।

**साम्प्रदायिक सौहार्द के प्रतीक :**

स्वामी श्रद्धानंद एकमात्र ऐसे आर्य संन्यासी थे जिन्होंने दिल्ली की जामा मस्जिद से वेद मंत्र 'त्वं हि न पिता' बोलते हुए उद्घोष दिया था। उन्होंनें गुरुकुलों में सदैव सभी मतों के लोगों का बड़ी उदारता से स्वागत किया। वर्तमान में वोट बैंक में बांटने की राजनीति करते हुए धार्मिक भावनाओं से खेलने वाले संकीर्ण सोच के नेताओं से समाज को बचाना होगा। तुष्टिकरण और धार्मिक कट्टरता का विरोध करना होगा। मनुष्य का आत्मा सत्य को जानने वाला है और वैदिक आर्य सिद्धांत सत्य पर आधारित हैं। सत्य के प्रकाश में सभी पाखंडों, अंधविश्वासों, कुरीतियों, धार्मिक कट्टरता का निराकरण होता है। कटुता और वैमनस्य छोड़कर दृढ़ता और विनम्रता के साथ यदि सत्य सिद्धांतों का प्रचार किया जाए तो कोई कारण नहीं कि सत्य आर्य वैदिक सिद्धांतों के सूत्र में धार्मिक वैमनस्य को भूल कर लोग एक हो जायें।

यदि सही मायनों में स्वामी श्रद्धानंद को सच्ची श्रद्धांजलि उनके सर्वोच्च आत्म बलिदान पर देनी है तो उनके जीवन से प्रेरणा लेकर संघर्ष के लिए तत्पर होना होगा और वर्तमान समय में देश काल वातावरण में बने निराशा के माहौल में आशा की किरण बनकर समाज को नेतृत्व प्रदान करना होगा। यही हम सभी आर्य जनों की ओर से स्वामी श्रद्धानंद को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

---

# सजग संकल्प

–विद्यावती मिश्र

कामना से मुक्ति जो तुमको मिली है।
साधना से तुम उसे साजो संवारो!
शक्ति का उपयोग इस विधि से करो तुम,
वृद्धि जिससे राष्ट्र के सम्मान की हो,
देश का कल्याण करने के लिए बस,
अर्चना नित कर्म के भगवान की हो।
एक भी प्यासा यहाँ पर रह न पाए
दिव्य सुरसरि धार अवनि पर उतारो!
जानते तुम सिद्धि चेरि है तुम्हारी,
तुम सदा दाता रहे याचक नहीं हो,
मातृ मन्दिर के विमल जय के कलश हो
देहरी के दीन आराधक नहीं हो,
बन स्वयं मझधार कूलों को पकड़ लो,
हो नहीं भयभीत मांझी को पुकारो!
जो मिला है प्राप्त तुमको श्रेय उसका,
जो नहीं अब तक मिला वह अब मिलेगा,
प्रात की अरुणिम प्रभा भू पर बिखेरो,
हर सुमन स्वयमेव जागेगा, खिलेगा,
है सजग संकल्प ही पाथेय अविचल,
राह मत तुम सह प्रवासी की निहारो!

www.thearyasamaj.org



# स्वामी श्रद्धानन्द एक विराट् व्यक्तित्त्व

❑ **डॉ॰ भवानी लाल भारतीय**, ३/५ शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर

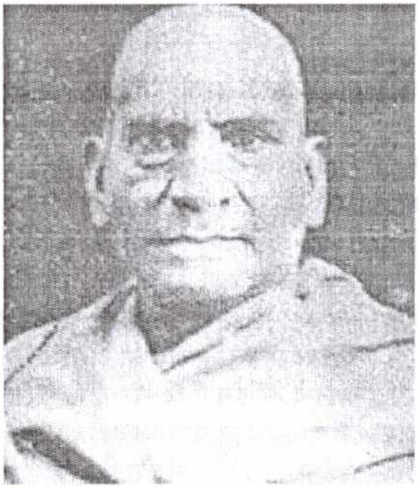

स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन अध:पतन के गहरे गह्वर से निकलकर सार्थकता के सर्वोच्च सोपान पर चढ़ जाने की एक गौरवमयी कथा है। अपनी किशोर और युवावस्था में चारित्रिक पतन की विभीषिकाओं ने उन्हें समय-समय पर त्रस्त और भयभीत तो किया, किन्तु उन पर विजय प्राप्त करने की उनकी चेष्टायें भी निरन्तर चलती रहीं और अन्ततः पर्याप्त प्रयास के पश्चात ही सही, वे अपनी इन क्षुद्र इन्द्रियजन्य दुर्बलताओं को नियंत्रित कर सके। उनके जीवन में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन तब आया, जब बरेली में उन्हें ऋषि दयानन्द के तेजोपूत, ब्रह्मचर्य की गरिमा से उद्दीप्त, लोकहित के प्रति पूर्णतया समर्पित, सत्य और धर्म के लिए सर्वथा संकल्पित व्यक्तित्व को निकट से जानने का अवसर मिला। यूरोप के प्रखर चिन्तकों और तार्किक दार्शनिकों के विचारों के रंग में रंगे मुंशीराम को प्रथम बार ज्ञात हुआ कि भारत का यह साधु, जो सर्वथा निरासक्त जीवन व्यतीत करते हुए भी समाज और राष्ट्र की कल्याण कामना करता है तथा लोगों के बौद्धिक क्षितिज के विस्तार के लिए निरन्तर प्रयत्नशील है, कोई काम की बात कह सकता है। अन्यथा दयानन्द की वक्तृता सुनने से पहले तक तो उसे विश्वास ही नहीं था कि भारत का भिक्षोपजीवी संन्यासी-वर्ग भी कोई अक्ल की बात करता है।

दयानन्द का यह सम्पर्क ही मुंशीराम के जीवन को पतन की कारा से मुक्त करा सका और उसके पश्चात् तो उनकी जीवनधारा जिस दिशा की ओर उन्मुख हुई, उससे वे निरन्तर श्रेय साधना में ही लगे रहे। श्रद्धानन्द का जीवन श्रद्धा और विश्वास के दो सूत्रों से सतत ओत-प्रोत रहा। जिन नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों में उनकी आस्था रही, उनको स्वयं में लाने तथा अन्यों में प्रचारित करने में वे सदा तत्पर रहे। इसी प्रकार जिन विचारों और कार्यक्रमों के प्रति उनकी आस्था समाप्त होती गई, उनको त्यागने में भी उन्हें कोई संकोच नहीं हुआ। लाहौर में रहते समय वे ब्रह्मसमाज तथा आर्यसमाज के प्रति समान रूप से आकर्षण का अनुभव करते थे, किन्तु जब अपनी पुनर्जन्म-विषयक जिज्ञासा का समाधान उन्हें सत्यार्थप्रकाश में मिला, तो वे दयानन्दीय विचारधारा के प्रति पूर्णतया अनुरक्त और समर्पित हो गए तथा अपने अवशिष्ट जीवन को आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में ही लगा दिया।

श्रद्धानन्द का सार्वजनिक जीवन निरन्तर विकसन शील रहा, किन्तु उसका केन्द्र बिन्दु आर्यसमाज ही था जो धर्म, समाज और राष्ट्र के कल्याण के साथ विराट् मानवहित जैसे लोकोत्तर आदर्श को लक्ष्य बनाकर जनमानस को आन्दोलित और प्रभावित रहता था। उन्नीसवीं सदी के अन्तिम दशक में वे अपने जन्मप्रान्त पंजाब की आर्य सामाजिक गतिविधियों के सूत्रधार बने रहे। जालन्धर के प्रधान-पद पर रहकर उन्होंने धर्मप्रचार की मस्ती को अनुभव किया तथा अपने आचार्यदेव के स्वप्नों को सार्थक बनाने हेतु अधिकतम त्याग, परिश्रम, अध्यवसाय और पुरुषार्थ का जीवन जिया। लाहौर के उनके सामाजिक जीवन ने उन्हें आर्यसमाज के एक दल के गौरवशाली नेता के पद पर प्रतिष्ठित किया, जो उतना अधिक चुनौतीभरा भी सिद्ध हुआ। जब मांसाहार के विरोध तथा पाश्चात्य शिक्षा को प्रधानता न देकर गुरुकुलीय शिक्षा के

> शुद्धि और संगठन के कार्यक्रमों में महात्मा हंसराज के नेतृत्व में कॉलेज-दल ने भी उन्हें पूरा-पूरा सहयोग दिया और एक बार पुनः संसार को दिखा दिया कि ऋषि दयानन्द के अनुयायी धर्म और समाज के व्यापक हित में कन्धे से कन्धा मिलाकर आगे बढ़ सकते हैं।

www.thearyasamaj.org

प्रवर्तन जैसे मुद्दों पर उनका विपक्षी दल से टकराव हुआ, तो मुंशीराम की चारित्रिक दृढ़ता, सिद्धान्त-निष्ठा तथा वैदिक धर्म के प्रति उनके अनन्य प्रेम की ही परीक्षा हुई। दलीय संघर्ष की इस अग्नि ने तपाकर मुंशीराम को कुन्दन बना दिया और अब वे मात्र आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के ही प्रधान नहीं रहे, किन्तु सम्पूर्ण आर्य जगत् के बेताज बादशाह बन गये। उनके समक्ष विरोधी पक्ष के साधारण नेता तो बौने ही लगते थे। महात्मा हंसराज और लाला लाजपतराय की ख्याति तथा प्रसिद्धि के तो कुछ कारण भी थे।

लाला मुंशीराम के आर्यसमाज में प्रविष्ट होते समय लाहौर आर्यसमाज के पितामह तुल्य लाला साईंदास ने कहा था कि आज एक नई शक्ति का आर्यसमाज में प्रवेश हो रहा है, पता नहीं यह आर्यसमाज को तारेगी या डुबायेगी। श्रद्धानन्दचरित का पूर्ण अवगाहन करने के पश्चात् हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मुंशीराम नाम का जो व्यक्ति उस दिन आर्यसमाज लाहौर का सभासद् बना था, उसने ऋषि दयानन्द की इस दिव्य संस्था के गौरव को चार चाँद ही लगाये हैं। आज आर्यसमाज के १३८ वर्ष के इतिहास में दयानन्द के पश्चात् श्रद्धानन्द से भिन्न हमें कोई ऐसी हस्ती दिखाई नहीं देती, जिसने धर्म, समाज, राष्ट्र तथा अखिल मानवजाति के हितचिन्तन में अपने-आपको इस प्रकार सर्वथा निमज्जित और समर्पित किया हो।

भारत की शिक्षा-प्रणाली में पुरातन तत्त्वों को पुनः प्रविष्ट कराना तथा उसे नैतिकता, चरित्र, धर्म, त्याग और बलिदान की सिद्धि में नियोजित करना महात्मा मुंशीराम का एक अन्य ऐतिहासिक कार्य था। जो लोग श्रद्धानन्द का एक आर्यसमाजी नेता के रूप में मूल्यांकन नहीं करते, वे भी मानते हैं कि भारत की शिक्षा में नैतिक मूल्यों का प्रवेश उनके द्वारा ही संभव हुआ। महामना मालवीय जी द्वारा स्थापित हिन्दू विश्वविद्यालय तो अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की प्रतिद्वन्द्विता में स्थापित पाश्चात्य प्रणाली की एक शिक्षण-संस्था ही बनकर रह गया, किन्तु गुरुकुल काँगड़ी तो भारत की उस पुरातन शिक्षा-व्यवस्था को ही पुनरुज्जीवित करने का एक सार्थक प्रयास था, जिसका उल्लेख प्राचीन संस्कृत-साहित्य तथा आर्ष ग्रंथों में तो उपलब्ध होता है, किन्तु विगत अनेक शताब्दियों तक उनके अनुरूप कोई संस्था सचमुच भारत में पनप सकी है, यह कहना कठिन है। गुरुकुल की शिक्षा-पद्धति को देखकर यदि देशभक्त एण्ड्रूज तथा इंग्लैंड के रैम्जे मैकडॉनल्ड जैसे राजनीतिज्ञों को आश्चर्यमिश्रित प्रसन्नता हुई, तो महात्मा गांधी जैसे भारत के राष्ट्रीय नेताओं ने भी उसकी प्रशंसा करने में कंजूसी नहीं दिखाई।

**देश में हिन्दू समाज का बहुमत है। देश के हित भी तभी तक सुरक्षित हैं जब तक हिन्दू यहाँ रहकर सम्मान और गौरव का जीवन बिताते रहें।**

**कर्मयोगी श्रद्धानन्द का जीवन जितना शानदार था, उनकी मृत्यु भी उतनी ही गौरवशालिनी थी, जिस पर महात्मा गांधी को भी ईर्ष्या करनी पड़ी।**

गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता और आचार्य-पद पर अपने जीवन के कुछ न्यून दो दशक व्यतीत करने के पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द को लगा कि अब उन्हें गुरुकुल की प्राचीरों से बाहर निकलकर देश की स्वाधीनता के यज्ञ में भी अपनी आहुति देनी है। दक्षिण अफ्रीका में कुछ ठोस सेवा करके स्वदेश लौटने वाले जिस कर्मवीर गांधी का उन्होंने गुरुकुल में उस समय स्वागत किया था, जबकि देश के अधिकांश लोग उसे भलीभाँति जानते भी नहीं थे और जिसे उन्होंने 'महात्मा' कहकर पुकारा था, सौराष्ट्र का वही बैरिस्टर मोहनदास गांधी अब भारत के जन-मन की आशाओं और आकांक्षाओं का प्रतीक बन देश में सर्वत्र देवता की भाँति पूजा और आराधना का पात्र बना हुआ था। स्वामी श्रद्धानन्द ने अनुभव किया कि देश के लिए भी कुछ करने का समय अब आ गया है। १९१७ से १९२२ तक के पाँच वर्ष राष्ट्रदेव की सेवा में उन्होंने समर्पित किये। यही वह समय था, जब दिल्ली के चाँदनी चौक में उन्होंने सिपाहियों की संगीनों के प्रहार के लिए अपनी छाती को खोला, जामा मस्जिद की प्रवचन-वेदी से परमपिता की पुनीत महिमा का आख्यान करते हुए हिन्दुओं और मुसलमानों को देश के लिए सर्वस्व निछावर करने की प्रेरणा की, कांग्रेस की उच्च कमान के एक महत्त्वपूर्ण अंग बनकर इस राष्ट्रीय संस्था की नीतियों का संचालन किया और समकालीन राष्ट्रनेताओं के आदरास्पद बने। राजनीति में धर्म, नैतिकता तथा आध्यात्मिकता के पावन मूल्यों को समाविष्ट कराने का श्रेय महात्मा गाँधी को तो निश्चय ही मिला, किन्तु इसके लिए इतिहासकार स्वामी श्रद्धानन्द को भी विस्मृत नहीं कर सकेंगे, क्योंकि उन्होंने ही सत्याग्रह को 'धर्मयुद्ध' की संज्ञा दी थी तथा जिन्हें अमृतसर कांग्रेस

www.thearyasamaj.org

के स्वागताध्यक्ष के पद को स्वीकार करने का अनुरोध करते समय महात्मा गांधी ने लिखा था–''यदि आप स्वागत समिति के सभापति हो जायेंगे तो आप कांग्रेस में धार्मिक भाव पैदा करने में समर्थ हो सकेंगे।''

कांग्रेस के कार्यक्रम में स्वदेशी के महत्त्व, राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार तथा अछूतोद्धार जैसे रचनात्मक मुद्दों को स्थान दिलाने के लिए स्वामी जी का कर्तृत्व सदा याद किया जाता रहेगा। महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन में उनकी कितनी जबरदस्त आस्था थी, यह हम उनके उस पत्र में देखते हैं, जो उन्होंने २५ सितम्बर १९२० को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान लाला रामकृष्ण जी को लिखा था। इसमें उन्होंने स्पष्ट स्वीकार किया कि ''इस समय में मेरी सम्मति में असहयोग की व्यवस्था के क्रियात्मक प्रचार पर ही मातृभूमि का भविष्य निर्भर है। यदि यह आन्दोलन अकृतकार्य हुआ और महात्मा गांधी को सहायता न मिली तो देश की स्वतंत्रता का प्रश्न ५० वर्ष पीछे जा पड़ेगा। यह जाति के जीवन व मृत्यु का प्रश्न हो गया है।'' राष्ट्र की आजादी की लड़ाई के सैनिक बनने में यदि उन्हें गुरुकुल या आर्यसमाज का काम थोड़े समय के लिए छोड़ना भी पड़ा तो उसका उन्हें कोई खेद नहीं था, क्योंकि उन्हें देश की स्वतंत्रता का यह युद्ध सर्वोपरि दीखता था।

किन्तु जब उन्होंने देखा कि आजादी की लड़ाई का यह कर्णधार (गांधी जी) खुद कभी–कभी सनक में आकर ऐसे फैसले कर जाता है जिनसे सारे देश को परेशानी का सामना करना पड़ता है और देशवासियों की संघर्ष करने की शक्ति और वृत्ति को आघात पहुँचता है, तो उन्होंने गांधी जी के द्वारा भावना और आवेश में लिये उनके इन फैसलों का प्रतिवाद भी किया। गांधी जी ने तो स्वयं अपने कतिपय निर्णयों को हिमालय जैसी भूल माना ही था। गांधी जी की मुस्लिम–तोषिणी नीति से भी वे सहमत नहीं थे। यदि महात्मा गांधी हिन्दुओं और मुसलमानों को समान स्तर पर रखकर उनकी किसी आपत्तिजनक बात की आलोचना या टीका करते तो वह समझ में आनेवाली बात थी। किन्तु मुसलमानों की साम्प्रदायिक विद्वेषयुक्त बातों को सहन करना एवं उनकी संकीर्ण मनोवृत्ति के प्रति अकारण उदारता दिखाना, स्वामी श्रद्धानन्द को कदापि पसन्द नहीं था।

अन्ततः वे कांग्रेस से भी दूर हट गये। उनके विचार में देश में हिन्दू समाज का बहुमत है। देश के हित भी तभी तक सुरक्षित हैं जब तक हिन्दू यहाँ रहकर सम्मान और गौरव का जीवन बिताते रहें। किन्तु सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से असंगठित हिन्दुओं को जब तक एकता के सूत्र में आबद्ध नहीं किया जाता, तब तक वे देश की स्वाधीनता, उन्नति और प्रगति के लिए अपना समुचित योगदान करने में असमर्थ हैं। ऐसी स्थिति में स्वामी श्रद्धानन्द ने हिन्दुओं को संगठित होने की प्रेरणा दी। संगठन अपने–आप में तो एक निराकार विचार–सा ही है। जातियों को संगठन का लाभ तभी मिलता है जब वे अपनी सामाजिक दुर्बलताओं को दूर करती हैं तथा भाव, भाषा, विचार, संस्कृति और जीवनदर्शन में समरसता रखती हैं। हिन्दू जाति का संगठन तभी सम्भव था, यदि उसके नेता दलित वर्गों की समस्याओं और कठिनाइयों का तत्काल समाधान ढूँढते और शताब्दियों से पीड़ित तथा ठुकराये गए इन लोगों को उनके अधिकार प्रदान करते। इसी कारणवश अन्य मतों में चले गये लोगों को अपने धर्म में प्रविष्ट करने के लिए चलाये गये शुद्धि–आन्दोलन की सफलता भी संगठन का एक साधन बन सकती थी। अतः अब स्वामी श्रद्धानन्द का समस्त ध्यान शुद्धि, अछूतोद्धार तथा सामाजिक कुरीतियों के निवारण जैसे कार्यक्रमों पर ही लगा। उनके प्रयासों को तब धक्का लगा, जब उन्होंने देखा कि संकीर्ण बुद्धि वाले सनातनी समाज को न तो अछूतों को उनका प्राप्य देना ही पसन्द है और न वे शुद्ध होकर हिन्दू धर्म में प्रविष्ट लोगों को ही दिल खोलकर अपनाने के लिए तैयार हैं। यद्यपि पं॰ मदनमोहन मालवीय जैसे उदार नेताओं के प्रभाव में आकर अधिकांश हिन्दुओं ने अछूतोद्धार तथा शुद्धि के कार्यक्रम को माना तो अवश्य, किन्तु यहाँ भी भारती कृष्णतीर्थ तथा अन्य पौराणिक नेताओं ने आर्यसमाज के प्रति अपनी मात्सर्य–वृत्ति का ही परिचय दिया। उन्हें आशंका थी कि इन कार्यक्रमों को सफल बनाकर आर्यसमाज अपने प्रभाव की वृद्धि कर रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द के लिए यह सर्वथा अनपेक्षित था और अब वे हिन्दू महासभा से भी निराश हो गये।

अन्ततः उन्हें कवि गुरु की 'एकला चलो' की नीति ही अपनानी पड़ी। अब वे अपने कार्यक्रमों के लिए आर्यसमाज के लोगों पर ही निर्भर हो चले और सभी के सहयोग से उन्होंने शुद्धि और संगठन का शंखनाद किया। इन कार्यक्रमों में महात्मा हंसराज के नेतृत्व में कॉलेज–दल ने भी उन्हें पूरा–पूरा सहयोग दिया और एक बार पुनः संसार को दिखा दिया कि ऋषि दयानन्द के अनुयायी धर्म और समाज के व्यापक हित में कन्धे से कन्धा मिलाकर आगे बढ़ सकते हैं। ऐसे कर्मयोगी श्रद्धानन्द का जीवन जितना शानदार था, उनकी मृत्यु भी उतनी ही गौरवशालिनी थी, जिस पर महात्मा गांधी को भी ईर्ष्या करनी पड़ी।

www.thearyasamaj.org

स्वामी श्रद्धानन्द जी का एक सन्देश (गुरुकुल पत्रिका से)

# बेटियों को शिक्षित और शक्तिशाली बनाओ।

लेखक : **स्वामी श्रद्धानन्द जी** प्रस्तुति : डॉ० विवेक आर्य, शिशु रोग विशेषज्ञ

ऐसी दृढांग देवियाँ यदि सत्य विद्या के आभूषण से आभूषित कर दी जाएँ तब वह सन्तान उत्पन्न हो सकती है जिसकी वेद भी राष्ट्र के लिए आवश्यकता बतलाता है।

भारत माता का विलाप सन्तान के लिए असहाय हो गया। इसीलिए सन्तान माता की रक्षा और पुनरुत्थान के लिए हाथ पैर मार रही है। अब तक पुरुष ही यत्न करते रहे थे, कुछ दिनों से स्त्रियों ने मातृ सेवा का व्रत लेना शुरू कर दिया है।

मन कितना ही उठने वाला विशाल क्यों न हो बिना दृढ़ बलवान शरीर और आत्मा के वह विवश ही रहता है। भारतीयों में मानसिक भाव बड़े व्यापक हैं। किन्तु आत्मा और शरीर की निर्बलता के कारण उनके संकल्प केवल संकल्प मात्र ही रहते हैं। निर्बल तेजहीन शरीर के अन्दर तेजस्वी आत्मा का निवास भी दुस्तर है।

कहा जाएगा कि सुशिक्षित पुरुषों ने शारीरिक उन्नति और दृढ़ता की ओर ध्यान देना आरम्भ कर दिया है। किन्तु सन्तान वही कुछ बनती है जो उसके माता पिता (विशेषत: माता) बना दें। भारत को वीर सिंह सन्तान चाहिएँ। वेद के आदेशानुसार–

अस्य यजमानस्य वीरो जायताम्।

राष्ट्र में वीर सन्तान उत्पन्न होनी चाहिएँ। वह वीर सन्तान कैसे उत्पन्न होगी?

आजकल की विदेशी शिक्षा पद्धति ने जहाँ भारतीय बालकों के शरीर निस्तेज कर दिए हैं, वहाँ आर्य बालिकाओं को भी अत्यंत निर्बल बना दिया है। आज से ४० वर्ष पहले की आर्य देवियाँ यद्यपि सर्वभाषाओं के अक्षरों से शून्य थीं तथापि शारीरिक बल से वंचित न थीं। उनमें इतनी शक्ति अवश्य थी कि कम से कम स्वस्थ और दृढ़ांग सन्तान उत्पन्न करें। विदेशी शिक्षा ने भारत की कुछ पुत्रियों को पुस्तक पढ़ने और अक्षर लिखने के योग्य तो बना दिया परन्तु साथ ही उन्हें दृढ़ंग और सन्तान उत्पन्न करने के योग्य नहीं छोड़ा। ऊँची एडी के बंद और रंग बिरंगी रेशमी साड़ियाँ पहन कर हमारी पुत्रियाँ और बहनें तितलियाँ बना दी गई हैं। तितलियों के गर्भ से सिंह कैसे पैदा हो सकते हैं?

६०० वर्ष हुए मेवाड़ की गद्दी पर राजा अजयसिंह बैठे। उनके पीछे उनके भाई अमरसिंह के पुत्र को गद्दी मिलनी थी। उनका पुत्र प्रसिद्ध राना हमीर हुआ जिसने ६४ वर्षों में मेवाड़ की काया पलट दी थी। उसने मेवाड़ के खोए हुए सहस्रों दुर्ग ही मुसलमानों से न लौटा लिए, अपितु बादशाह महमूद खिलजी को भी तीन महीने तक चित्तौड़ के कारागार में रखा। और उसने अजमेर, रणथम्भौर, नागौर, सुई, शिवपुर के इलाके ही न छुड़वा लिए अपितु ५० लाख रुपये हर्जाना और १०० हाथी कर में लिए। वह हमीर किस माता का पुत्र था? सुनो!

एक दिन अमरसिंह जंगली सुअर के शिकार के लिए जा रहा था। सुअर एक ज्वार के खेत में घुस गया। अमरसिंह के साथियों को खेत में जाते देख एक राजपूतनी लड़की ने, जो कि मचान पर बैठी थी, उनको खेत में घुसने से रोक कर कहा–

'तुम सब हट जाओ! मैं शिकार को खेत से निकाल

### वीर बनालो

वीर बनालो री माता वीर बना लो।
देश की बिगड़ी हुई तसवीर बना लो।।

महाराणा प्रताप शिवाजी की सन्तान हो।
राम कृष्ण और कर्ण के तुम खानदान हो।
हनुमान हो वज्र सा शरीर बना लो।।१।।

कभी तो कुल दुनिया को कायर मानते थे हम।
परन्तु आज देश में क्या छाया है मातम।।
कम से कम सुभाष सा रणधीर बना लो।।२।।

काबू करना जानते शत्रु को जकड़कर।
सतरह बार छोड़े तुमने पकड़ पकड़ कर।।
अकड़ कर जवानो वो तदबीर बना लो।।३।।

धरती दहल जाती थी जब लेते थे कृपाण।
मिनटों मे मिटा देते थे गद्दारों का निशान।।
चन्द्रभान भीष्म सी तकरीर बना लो।।४।।

(भजन–भास्कर से)

www.thearyasamaj.org

देती हूँ।'

ज्वार के एक गज लम्बे लट्ठे को उखाड़कर उससे सूअर को मार उनके सामने खींच लाई और विदा हो गई। राजपूत बहादुर उस शक्ति को देख आश्चर्य में भर गए। उन सबने पास की नदी के किनारे बैठकर शिकार भूना और जलसा मनाने लगे। उसी समय किसी का चलाया हुआ एक मिट्टी का गोला अमरसिंह के घोड़े को लगा और उसकी हड्डी तोड़ दी। देखने पर मालूम हुआ कि मचान पर से उसी कुमारी राजपूतनी ने जानवरों को हांकने के लिए यह गोला चलाया था। उससे हानि देखकर वह कुमारी उतरी और कुमार से क्षमा प्रार्थना करके चली गई। जब सब राजपूत घर को लौट रहे थे तो रास्ते में देखा कि वही कुमारी सिर पर दूध का घड़ा रखे दोनों हाथ से दो मस्त भैंसें पकड़े लिए जा रही थी। हंसी में उसके सिर से दूध गिराने के लिए एक सवार आगे बढ़ा। कुमारी घबराई नहीं। एक भैंस को घोड़े की टांग में अड़ाकर घोड़ा और सवार दोनों को गिरा दिया। अमरसिंह ने कुमारी के पिता के पास पहुंचकर उससे विवाह करने का प्रस्ताव किया। वह चन्दावत राजपूत था। निर्धन होते हुए भी अमरसिंह के बराबर बेपरवाही से बैठ गया और प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया। उसकी धर्मपत्नी ने जब समझाया, तब अमरसिंह का चन्दावत राजपूतों में से विवाह हुआ। उन दोनों की सन्तान राणा हमीर था।

कैलवे के फतहसिंह की माता और धर्मपत्नी ने चित्तौड़गढ़ से निकलकर मुगल सेना में हलचल डाल दी थी और सैंकड़ों को मार कर देश की स्वतंत्रता पर अपनी जान कुर्बान कर दी थी।

वह विद्या व्यर्थ है जो शरीर और आत्मा को निर्बल कर दे। झांसी की रानी की कहानी भी कोई बहुत पुरानी नहीं है। ३२ वर्ष पहले की एक घटना तो मेरे सामने ही घटित हुई थी। एक नवविवाहित जाट लड़की यात्रा में कुटुम्ब के साथ सोई हुई थी। रात को चोर ने चांदी की चूड़ी उतारने के लिए हाथ बढ़ाया। १७ वर्ष की जाट लड़की ने उसके दोनों हाथ पकड़ लिए। श्वसुर और अन्य बड़े बूढ़ों से लजाते बोल न सकती थी। ३ घंटे तक उसी तरह पकड़े रखा। जब चोर ने हाथ छुड़ाना चाहा तो उसकी कलाइयाँ इतनी दबाई कि चोर चीख उठा। तब पुरुष जागे और चोर पकड़ा गया।

ऐसी दृढांग देवियाँ यदि सत्य विद्या के आभूषण से आभूषित कर दी जाएँ तब वह सन्तान उत्पन्न हो सकती है जिसकी वेद भी राष्ट्र के लिए आवश्यकता बतलाता है। अब तक कन्या पाठशालाओं और महाविद्यालयों के संचालकों के पास वह सन्देश भेजता रहा हूँ और अब जब तक कि कन्या गुरुकुल खोलने का साहस किया गया है, वही सन्देश उस संस्था के संचालकों के पास पहुंचाना चाहता हूँ।

# निर्भयता का आदर्श

डॉ॰ विवेक आर्य, शिशु रोग विशेषज्ञ
drvivekarya@yahoo.com

1918 में जब गढ़वाल में अकाल पड़ा था तो स्वामीजी महाराज ने अकाल पीड़ितों की सहायता का विशाल आयोजन किया और अपने मानसिक पुत्रों (जिनमें हम सब विद्यार्थी सम्मिलित थे) को इस यज्ञ में अपनी अपनी आहुति देने के लिए निमंत्रित किया। महाविद्यालय विभाग के प्राय: सब ब्रह्मचारी सेवा कार्यार्थ वहाँ पहुच कर स्वामीजी की अधीनता में कार्य करने लगे। मुझे क्योंकि पूज्य आचार्य जी के साथ पौड़ी, रूद्रप्रयाग, उत्तरकाशी, केदारनाथ आदि अनेक स्थानों में जाने और कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, अत: मैं जानता हूँ कि उनका हृदय कितना संवेदनशील था, किस प्रकार पीड़ितों की अवस्था को देखकर उनकी आँखों में आंसू आ जाते थे तथा उनके दु:ख निवारणार्थ वे आतुर रहते थे। कई बार वे 18-20 मील तक हमारे साथ चलते थे और अपने आराम की तनिक भी चिन्ता न करते थे। उन्हीं दिनों की बात है- गढ़वाल के एक स्थानीय पत्र में किसी आर्यसमाजी सज्जन ने वहाँ की सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध एक लेख लिखा जिससे गढ़वाली जनता में खलबली मच गई और कुछ अविवेकी गढ़वालियों ने आर्यसमाज के सर्वमान्य नेता के रूप में स्वामी श्रद्धानन्द जी पर ही आक्रमण करने का निश्चय किया और इस उद्देश्य से पौड़ी में एक सभा बुलवाई। इसकी सूचना अपने कुछ भक्तों द्वारा पाते ही (जिन्होंने उनसे निवेदन किया की वे पौड़ी न जायें क्योंकि उन पर आक्रमण होने की आशंका थी) वीर केसरी स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज न केवल रुद्र प्रयाग से पौड़ी पहुंचे बल्कि उस सभा में भी जा पहुंचे जहाँ उनके विरुद्ध बड़ी भयंकर उत्तेजना फैलाई जा रही थी। वीर नर सिंह के उस सभा में पहुंचते ही सारा वातावरण परिवर्तित हो गया और स्वामी जी के निंदासूचक प्रस्ताव के स्थान में चारों ओर से उनकी सेवाओं के लिए अभिनन्दन किया जाने लगा। यह था निर्भयता का आदर्श जो ईश्वर के सच्चे भगत उन वीर संन्यासी ने प्रत्येक समय दिखाया था और जिसके कारण सब विरोधिनी शक्तियों पर विजय प्राप्त करने में वे सफल हुए थे। (स्वामी श्रद्धानन्द के अनन्य भक्त एवं शिष्य पंडित धर्म देव विद्यामार्तण्ड जी के स्वामी जी के विषय में अलभ्य संस्मरण सन्दर्भ- सार्वदेशिक दिसम्बर 1946 अंक)

www.thearyasamaj.org



# आत्मश्लाघा आत्महत्या के समान है

❑ रामफल सिंह आर्य, ८७/एस-३, बी एस एल कालोनी सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि० प्र०) ०९४१८२७७७१४

अत: पार्थ! अब तुम अपनी ही वाणी द्वारा अपने गुणों का वर्णन करो। ऐसा करने से यह मान लिया जायेगा कि तुमने अपने ही हाथों अपना वध कर लिया।

महाभारत का युद्ध चल रहा था। दोनों ओर के महारथी अपने-२ शौर्य का प्रदर्शन कर रहे थे। प्रतिदिन न जाने कितने योद्धा काल के कराल गाल में समा जाते थे। कहीं रक्त पिपासु बनी असिधारा अपने शत्रुओं के शोणित से अपनी चिर प्रतीक्षित पिपासा को शांत कर रही थी तो कहीं गदाओं की गहन-गंभीर गर्जना अस्थियों का भंजन कर रही थीं। भयंकर फल वाले भल्ल दृढ़ कवचों का भेदन करके वीरों का मान मर्दन कर रहे थे। पितामह भीष्म, आचार्य द्रोण, दुर्योधन, कर्ण, अश्वत्थामा, आचार्य कृप यदि पाण्डवों की सेना का संहार कर रहे थे तो धृष्टद्युम्न, भीम, अर्जुन आदि महायोद्धा कौरवों की सेना को सरकण्डों की भाँति उखाड़ कर फैंक रहे थे। अत्यन्त तीक्ष्ण शरों की सनसनाहट से वायुमण्डल प्रकम्पित हो रहा था तो दिव्य अस्त्रों से निकलती प्रकाश की किरणें कितने सिरों की बलि ले जाती थी, कोई गणना ही न थी।

इधर से आजानुबाहू महावीर अर्जुन और उधर से महारथी कर्ण, जिस ओर भी अपना रथ ले जाते उसी ओर धरा शवों से पटने लगती और किस सैनिक की ग्रीवा किसके धड़ पर जा पड़ी, किसके हाथ और किसके पैर कहाँ पर पड़े हैं, कोई पहचान भी न सकता था। दोनों ओर के यौद्धाओं का उबलता शोणित जब भूमि पर गिरता था तो मानो धरा को भी दग्ध कर जाता था।

धर्मराज युधिष्ठिर जब युद्ध करता हुआ वीर कर्ण के समक्ष आया तो आन की आन में कर्ण ने उसके शस्त्रों को ऐसे निष्फल कर दिया जैसे कोई मस्त गजराज मार्ग में आने वाले वृक्षों एवं लताओं को उखाड़ फैंकता है। अपने तीक्ष्ण एवं अचूक बाणों द्वारा तो युधिष्ठिर को क्षत-विक्षत किया ही, परन्तु अपनी वाणी द्वारा भी उनका घोर तिरस्कार करते हुए कहा- कुन्तीनन्दन जाओ। अपने घर चले जाओ अथवा जहाँ श्रीकृष्ण एवं अर्जुन हों, वहीं पधारो। तुम युद्ध के योग्य नहीं हो।

किसी योद्धा का भला इससे बढ़कर और क्या अपमान हो सकता था? युधिष्ठिर के तन में चुभे तीर तो निकाल दिये गये परन्तु वाणी के कटु घावों को भला कौन और कैसे भर सकता था। अपमान तिरस्कार एवं घृणा की अग्नि उन्हें निरन्तर दग्ध कर रही थी।

वीर अर्जुन उनकी इस व्यथा को जानकर बोल उठे कि आज के युद्ध में कर्ण जीवित नहीं बचेगा। परन्तु कर्ण का वध करना कोई बच्चों का खेल न था। दोनों वीरों का भयानक युद्ध हुआ। वार पर वार हुए। दोनों घायल हुए। दोनों के दांव पेंच चले परन्तु अर्जुन अपना वचन पूरा न कर सके। युद्ध के उपरांत जब वे अपने शिविर में आये तो युधिष्ठिर जो यह आशा संजोये बैठे थे कि उनका दुर्मुख शत्रु मारा जायेगा, आते ही अर्जुन से बोल उठे- कहो, मार दिया कर्ण को? मेरे लिये शुभ समाचार लाये हो ना! परन्तु यह जानकर कि कर्ण आज भी जीवित बच गया, युधिष्ठिर अमर्ष एवं रोष के वशीभूत होकर बोल उठे-

धिग्गाण्डीवं धिक् च ते बाहुवीर्यम-
संख्येयान्बाणगणाँश्च धिक् ते।
धिक् ते केतुं केसरिणः सुतस्य
कृशानुदत्तं च रथं च धिक् ते।।
(महा० कर्ण० ६९/१४)

अर्जुन! तुम्हारे इस गाण्डीव को धिक्कार है। तुम्हारी भुजाओं के पराक्रम को धिक्कार है। धिक्कार है तुम्हारे इन असंख्य बाणों को! धिक्कार है तुम्हारी वानर ध्वजा को! और धिक्कार है अग्निदेव के दिए हुए इस रथ को!

बस फिर क्या था? अर्जुन की प्रतिज्ञा थी कि यदि कोई उनके गाण्डीव का अपमान करेगा तो वे उसे जीवित न छोडेंगे। म्यान से निकल कर तलवार उनके हाथ में आ गई और वे बड़े भ्राता को मारने के लिए सन्नद्ध हो गये। श्रीकृष्ण जी की नीति ही यहाँ पर काम आई और उन्होंने अर्जुन को समझाया। अब अर्जुन को आत्म ग्लानि हुई कि वह क्या करने चला था तो ग्लानि के कारण स्वयं मरने को तैयार हो गया। पुनः योगिराज ने उसे समझाते हुए कहा कि यदि स्वयं को मारना ही है तो अपनी प्रशंसा अपने मुख से कर दो। क्योंकि वह व्यक्ति तो मरा हुआ ही समझा जाता है जो आत्मश्लाघा करता हो। अपनी ही वाणी से अपना गुणगान करता हो। उन्होंने कहा;

www.thearyasamaj.org

हत्वात्मानमात्मना प्राप्नुयास्त्वं
भ्रातुर्वधान्नरकं चातिघोरम्।
ब्रूहि च वाचाद्य गुणानि ह्यात्मन
स्तथा हतात्मा भवितासि पार्थ।।
(महा० कर्ण० ६९/२२)

अर्थात्, भाई का वध करने से जिस अत्यन्त घोर नरक की प्राप्ति होती है, उससे भी भयानक नरक तुम्हें आत्महत्या करने से प्राप्त हो सकता है। अतः पार्थ! अब तुम अपनी ही वाणी द्वारा अपने गुणों का वर्णन करो। ऐसा करने से यह मान लिया जायेगा कि तुमने अपने ही हार्थो अपना वध कर लिया।

पाठक गण! उक्त वर्णन का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने पर जो मुख्य बात उभर कर आती है वह है कि कभी भी अपने मुख से अपनी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए। बड़ाई तो तब है जब कोई दूसरा हमारी बड़ाई करे। दूसरों में भी जो हमारे विरोधी हैं वे हमारे गुणों का गान करें; तब लोगों को यह बताने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी कि हम स्वयं कैसे हैं। छोटा मुंह और बड़ी बात के तो कहने ही क्या, जो बड़ा है- वास्तव में योग्य है, उसे भी अपनी प्रशंसा स्वयं नहीं करनी चाहिए। सूर्य अपना परिचय अपने प्रकाश से दे देता है और चन्द्रमा अपनी शीतलता से। इसी प्रकार हमारे कर्म ही हमारा वास्तविक परिचय देने वाले होते हैं। हमारी वाणी की अपेक्षा हमारे कर्मों की सुगन्ध उठे तो अधिक कल्याणकारी होगी। वैसे भी हमें दूसरों से अपनी प्रशंसा सुनने की अपेक्षा अपने दोष, अपनी कमियाँ सुनने की आदत डालनी चाहिए।

परन्तु संसार में है इसके विपरीत। हम अपने दोष तो कभी सुनना ही नहीं चाहते वरन् अपनी बड़ाई (चाहे झूठी ही क्यों न हो) सुनना चाहते हैं। नीति कहती है कि किसी मित्र की यदि निन्दा करनी है तो उसके मुंह पर करो और यदि प्रशंसा करनी है तो पीठ के पीछे करो। जो व्यक्ति मुंह पर मीठा बोले और पीछे कार्य बिगाड़े, उसे तो उस घड़े के समान जानना चाहिए कि जिसके मुख पर दूध लगा हो और अन्दर विष भरा हो। यह तो दूसरे प्रशंसकों की बात है, परन्तु जहाँ पर व्यक्ति स्वयं ही अपनी प्रशंसा के पुल बांधने लग जाये तो महाभारतकार के शब्दों में अपितु श्रीकृष्ण जी महाराज के शब्दों में उसने साक्षात् मृत्यु को अपना लिया है, मात्र मृत्यु को ही नहीं अपितु घोर नरक को अपना लिया है। उसे पतन के गर्त में जाने से कोई बचा नहीं सकता। नरक किसी स्थान विशेष का नाम नहीं अपितु 'नरक न्यर्क नीचैर्गमनं रमणं स्थानमल्पमप्यस्तीति वा' अर्थात् नरक उसको कहते हैं जिसमें मनुष्य निरंतर नीचे ही नीचे गिरता जाता है। इतना नीचे कि फिर उसके जीवन में सुख शांति व आनन्द का थोड़ा सा भी अवसर नहीं रह जाता। यह है आत्म स्तुति का फल।

एक बार हम दयानन्द मठ चम्बा के वार्षिक उत्सव पर गये हुए थे। उस समय वहाँ स्वामी सर्वानन्द जी महाराज आये हुए थे। यज्ञोपरान्त स्वामीजी का अत्यन्त सुन्दर एवं अनुकरणीय व्याख्यान हुआ। उनके शब्द तो बहुत सरल थे परन्तु उनमें भाव बहुत ऊँचा था। उत्सव की समाप्ति पर जब सब लोग जाने लगे तो हम उनसे मिलने गये। अन्य कई लोग और भी बैठे थे। अभिवादन के उपरान्त हमने उनसे कहा कि स्वामी जी हम जा रहे हैं, आपका आशीर्वाद लेने आये हैं। जाते-२ हमें कुछ उपदेश भी दीजिये। स्वामीजी हँस पड़े। उनकी वृद्ध एवं अनुभवी आंखें मानो आज भी हमारे सामने हैं। चेहरे पर वह निश्छल हंसी मानो आज भी हमारे आगे है। बोले- उपदेश! उपदेश तो भाई मात्र इतना ही है कि देखो पहली बात तो यह है कि कभी भी अपनी प्रशंसा स्वयं मत किया करो। दूसरी बात पुस्तकों के पन्ने पलटते समय उंगलियों को थूक मत लगाया करो और तीसरी बात यह है कि महर्षि दयानन्द के प्रति सदा श्रद्धाभाव रखा करो। नित्य-प्रति उनके ग्रंथों को पढ़ा करो। इसके उपरान्त हम उन्हें प्रणाम करके बाहर आ गये। देखा आपने! शब्द तो अति सरल और संक्षिप्त हैं परन्तु कितनी मार्मिक बातें कह गये। सबसे पहली बात यही कही कि कभी अपनी प्रशंसा स्वयं नहीं करनी चाहिए। आत्मस्तुति से भले ही थोड़ी देर के लिए हमें संतुष्टि मिल जाती है परन्तु अन्ततः यह घातक ही सिद्ध होती है।

यदि सामने वाला व्यक्ति विद्वान् है तो वह तुरन्त जान लेता है कि हम कैसे हैं। उसके सामने तो आत्म-स्तुति का प्रश्न ही नहीं उठता और मूर्ख के सामने अपनी बड़ाई करके लेना क्या है? अतः आत्मश्लाघा किसी भी रूप में कहीं भी उचित नहीं है। आत्मश्लाघा करने वाला व्यक्ति जीवन में कभी उन्नति नहीं करता, दोषों का घर बन जाता है। धीरे-धीरे सब लोग उसका खोखलापन जान लेते हैं।

श्रेष्ठ योद्धा, श्रेष्ठ नेता, श्रेष्ठ अधिकारी कभी-भी सफलता का श्रेय स्वयं नहीं लेता अपितु अपने सैनिकों, कार्यकर्ताओं एवं सहयोगियों के सिर पर रख देता है। इससे उसकी लोकप्रियता तो बढ़ती ही है, साथ ही उसके सहयोगी उसके लिये और भी अधिक पुरुषार्थ करके उसकी उन्नति में सहायक बन जाते हैं। इसके विपरीत मूर्ख एवं घमण्डी व्यक्ति अच्छे सहयोगियों को भी अपना शत्रु बना लेता है। इसलिए आत्मश्लाघा से सदैव दूर रहना चाहिये और यह विचार सदैव करते रहना चाहिये कि मुझे अपने शेष दोष दूर करने हैं। उन्नति का यही सोपान है। आत्मश्लाघा तो साक्षात आत्महत्या के समान होने से अत्यन्त त्याज्य है।

www.thearyasamaj.org



# ये महंगी शादियाँ

❑प्रो० शाम लाल कौशल
975-बी/20, ग्रीन रोड, रोहतक-124001

मनुष्यों तथा अन्य जीव जन्तुओं में एक अन्तर यह भी है कि मनुष्यों में पुरुष तथा स्त्री वैवाहिक बंधन में बंधकर एक दूसरे के हो जाते हैं जबकि अन्य जीव-जंतुओं में ऐसे किसी बंधन की कल्पना करना भी मजाक लगता है। मेरा मानना है कि विवाह के समय समाज के कुछ प्रतिष्ठित तथा जिम्मेवार व्यक्तियों, जैसे वर तथा वधु के माता-पिता तथा अन्य रिश्तेदारों की उपस्थिति में विवाह का सम्पन्न होना, इसके साक्षी मात्र होने के अलावा और कुछ विशेष महत्त्व नहीं रखता। धीरे-धीरे विवाह प्रथा को कुछ और सम्मानजनक तथा प्रभावशाली बनाने के लिए बारातों को वधु पक्ष के घर ले जाने तथा उनके स्वागत तथा सम्मान हेतु जलपान तथा भोजन की व्यवस्था की प्रथा शुरू की गई। शुरू में यह सारा कुछ बहुत साधारण होता था। धीरे-धीरे वधु पक्ष वालों ने अपनी बेटी को घर गृहस्थी से संबंधित कुछ वस्तुएं- जैसे कपड़े, बर्तन, आभूषण आदि भी देने शुरू किये जिसे 'दहेज' का नाम दिया। सभी लोग अपने सामर्थ्य के अनुसार ही विवाह-शादियों पर खर्च किया करते थे। यह कहावत आम थी कि 'जिसने अपनी लड़की दे दी, उसने सब कुछ दे दिया।' दहेज के लिए मांग नहीं होती थी और ना ही इस बात की मांग की जाती थी कि वधु पक्ष वाले वर पक्ष की बारात का स्वागत किस प्रकार करें।

लेकिन आजकल विवाह शादियाँ लोगों के लिए सारी उम्र याद रहने वाला एक महत्वपूर्ण अवसर बनता जा रहा है। पहले समय में लोग अपनी लड़कियों की शादियाँ अपने घर में ही किया करते थे। घर के आसपास या फिर गली में टैंट लगाकर बारात का स्वागत किया करते थे। बारात के स्वागत का सारा जिम्मा लड़की वालों तथा उनके रिश्तेदारों का होता था अर्थात् सारा काम वे स्वयं किया करते थे। लेकिन जैसे-जैसे लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार होता गया वैसे-वैसे विवाह शादियाँ धन-प्रदर्शन का एक अवसर बनने लगीं। लोग घरों में शादियां करने के बदले में फार्म हाऊसिज, होटलों, बैंकट हालों, आलीशान रिजोर्टो या बागों को ही इन कामों के लिए इस्तेमाल करने लगे। इन मौकों पर डांसरों, गायकों तथा फिल्मी हस्तियों को बुलाकर लाखों रुपए खर्च करने लगे। विवाह शादियों में बारातियों के लिए तरह-तरह की खाने-पीने की ऐसी चीजें परोसी जाने लगी हैं जिनकी आम आदमी कल्पना भी नहीं कर सकता। विवाह शादियों के निमंत्रण के एक कार्ड का खर्च जब २०००-३००० रु० हो तथा एक बाराती की खाने पीने की प्लेट का खर्च जब ४०००-५००० रुपए के आसपास हो और वर तथा वधू पक्ष के बारातियों की कुल संख्या १०००-२००० के आसपास हो तो कुल खर्चे का अंदाजा लगाया जा सकता है। ऐसा नहीं लगता कि किसी आम आदमी के परिवार के किसी सदस्य की शादी हो रही है बल्कि ऐसा लगता है जैसे कि किसी शाही खानदान की शादी हो रही है। आजकल लोग ६०-७० लाख रुपए शादियों पर खर्च करने लगे हैं जो कि बहुत सारे लोगों की सारी उम्र की कमाई भी नहीं हो सकती। कमाल की बात तो यह है कि इन महंगी शादियों पर महंगी-महंगी खाने-पीने की चीजें परोसी जाती हैं, उनमें से लगभग २५ प्रतिशत बेकार समझकर फेंक दी जाती हैं, जिन्हें अगले दिन गरीब लोग उठाकर कई-कई दिन तक गुजारा करते हैं।

अब सवाल यह पैदा होता है कि इन महंगी शादियों का क्या औचित्य है? बात साफ है कि जो लोग इन महंगी शादियों का आयोजन करते हैं उनमें से कई लोगों का दो नम्बर का पैसा होता है जिसे भ्रष्टाचार, करों में चोरी, गरीबों का खून चूस कर इकट्ठा किया गया होता है। इसका प्रयोग दूसरों को प्रभावित करने के लिए किया जाता है। इन अमीरों को देखकर गरीब लोगों को भी अपने बच्चों की शादियों पर अपेक्षाकृत ज्यादा खर्च करना पड़ता है ताकि उनकी बदनामी न हो। एक सीमा से ज्यादा पैसा विवाह शादियों पर खर्च करना देश के दुर्लभ साधनों का अपव्यय ही नहीं बल्कि

www.thearyasamaj.org

अन्य लोगों को गलत तरीके इस्तेमाल करके ऐसी शादियां आयोजित करने के लिए प्रभावित भी करता है। आज जब देश में गरीबी, बेकारी, पीने के पानी की कमी, शिक्षा तथा चिकित्सा सुविधाओं का अभाव है, अनेक लोगों के पास रहने के लिए कच्ची झोपड़ियां भी नहीं, विवाह शादियों पर अंधाधुंध पैसा बर्बाद करना अन्यायपूर्ण लगता है। आज इस बात की आवश्यकता है कि लोगों द्वारा विवाह शादियों पर होने वाले अनावश्यक व्यय पर प्रतिबंध लगाया जाए, बारातियों की संख्या तथा खाने पीने की परोसी जाने वाली चीजों की सीमा निर्धारित की जाए। अच्छा तो यही है कि समाज विवाह शादियों को सरल बनाये, विवाह शादियां दिन के समय में आर्यसमाजी तरीके या किसी अन्य तरीके से सम्पन्न करायी जायें ताकि इन पर खर्च कम से कम हो, दहेज पर

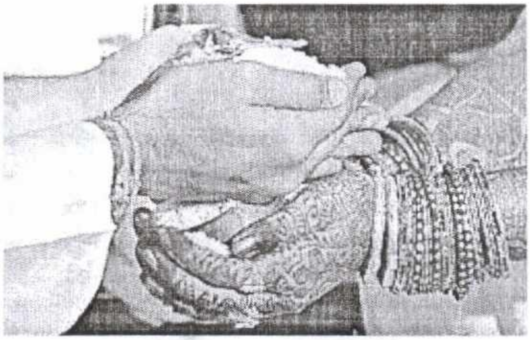

प्रतिबंध लगे। विवाह शादियों पर होने वाले व्यय को आयकर विभाग ध्यान में रखकर कार्रवाई करे। हमारे जनप्रतिनिधि अपने बच्चों की साधारण तौर पर शादियाँ सम्पन्न करके मिसाल कायम कर सकते हैं।

# टूटते संयुक्त परिवार : कौन जिम्मेवार

बच्चे अपने माता-पिता की बजाय टीवी तथा लेपटाप पर ज्यादा समय बिताते हैं। युवा पीढ़ी पश्चिमी सभ्यता का अनुसरण करके फूहड़ फैशन तथा अश्लील चलचित्र को पसंद करने लगी है। जिस कारण समाज में बलात्कार, छेड़छाड़ तथा लूटपाट जैसी घटनाएं बढ़ती जा रही हैं।

आज समाज में एकल परिवार बढ़ते जा रहे हैं। एक जमाना था जब कई-कई परिवार मिलकर रहते थे। बड़े परिवार में ५० से भी अधिक सदस्य होते थे। उनका एक मुखिया होता था जो पूरे परिवार का संचालन करता था। घर के सभी सदस्य अपने-अपने कार्य को प्रसन्नतापूर्वक करते थे। दु:ख-सुख को मिल-जुल कर सांझा करते थे। घर में माँ-बेटियाँ निर्भय होकर रहती थीं। परिवार में पूरी तरह सामाजिक सुरक्षा होती थी। घर में कई सदस्य होने के कारण सभी को घूमने-फिरने का भी पूरा मौका मिलता था। इस कारण सभी सदस्य तनाव रहित जीवन व्यतीत करते थे तथा दीर्घायु होती थी।

शाम को घर के सभी सदस्य एक जगह बैठकर अपने दु:ख-सुख सांझा करते थे। बड़े बुजुर्ग अपने अनुभवों द्वारा अपने परिवार की समस्याओं को हल करते थे। उनके उचित मार्गदर्शन में परिवार का कुशलतापूर्वक जीवन व्यतीत होता था। परिवार में खुशी और आपसी सौहार्द का माहौल होता था। घर में अनुशासन का वातावरण था तथा सभी एक दूसरे का हृदय से सत्कार करते थे। बच्चों को दादा-दादी शिक्षावर्धक कहानियाँ सुनाते थे, जिनसे बच्चों को अच्छी सीख मिलती थी। टेलीविजन तथा इंटरनेट की जगह भजन संध्या तथा लौरी सुनायी जाती थी।

परन्तु आज आधुनिक युग में संयुक्त परिवार टूटते जा रहे हैं। हर कोई स्वतंत्र जिंदगी जीना चाहता है। वह किसी की रोक-टोक नहीं चाहता। अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा करने की बजाय उनका तिरस्कार करने लगा है। आज आदमी अपने बच्चों को ज्यादा समय न देकर मौज, मस्ती में अधिक ध्यान लगा रहा है।

एकल परिवार में आदमी अकेला होने के कारण घरेलू कार्य में व्यस्त रहता है। जिम्मेवारी बढ़ने के कारण वह अपनी संतान पर कम ध्यान दे पाता है। इस कारण आज बच्चे कम संस्कारवान् होते जा रहे हैं। उनमें समर्पण त्याग और प्रेम की भावना घट रही है।

बच्चे अपने माता-पिता की बजाय टीवी तथा लेपटाप पर ज्यादा समय बिताते हैं। युवा पीढ़ी पश्चिमी सभ्यता का अनुसरण करके फूहड़ फैशन तथा अश्लील चलचित्र को पसंद करने लगी है। जिस कारण समाज में बलात्कार, छेड़छाड़ तथा लूटपाट जैसी घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। हमें पुरानी सभ्यता को फिर से अपनाना होगा। डीजे व अंग्रेजी धुन को छोड़कर हमारे पुराने लोकगीत तथा संस्कृति को बढ़ावा देना होगा। हमें मिलजुल कर संयुक्त परिवार प्रथा को अपनाना चाहिए ताकि मजबूत समाज स्थापित किया जा सके।

संकलनकर्ता : लीलूराम शर्मा 'प्रभाकर'
गांव व डाकघर मोहबतपुर, त० मण्डी आदमपुर (हिसार)

www.thearyasamaj.org



❑ योगिराज आचार्य कर्मवीर जी

# योग साधना का पथ

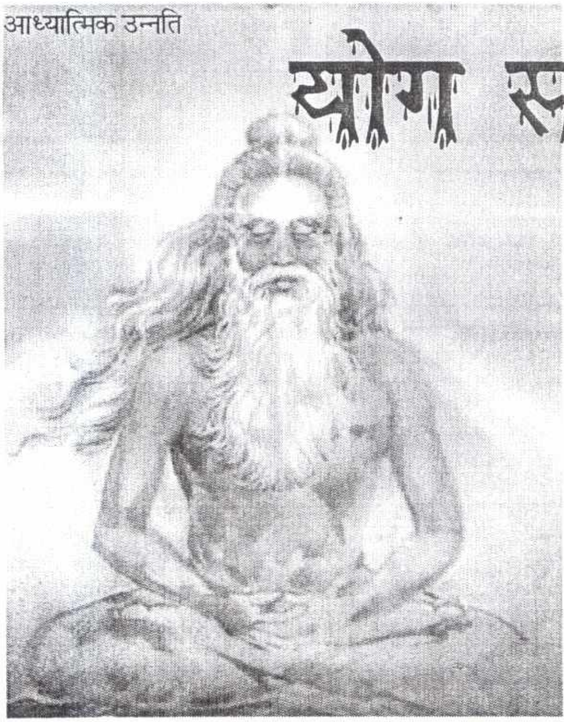

गहस्थ लोगों के लिए भी योग उतना ही आवश्यक है, जितना कि विरक्त लोगों के लिए। जो लोग केवल व्यायाम के रूप में योग को अपना रहे हैं, वह अपनी जगह महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह एक आदर्श जीवन की स्वागत योग्य शुरुआत है। बीज से ही वट वक्ष बनने की सम्भावना बनती है। अच्छा संस्कार किसी भी रूप में ग्रहण क्यों न किया जाये, आगे चलकर अच्छे फल देता है।

योग प्राचीन भारत की अनमोल निधियों में से एक हैं। आज योग देश-विदेश में लोकप्रियता अर्जित कर रहा है। इसके चमत्कारी लाभ भी प्रकट होने लगे हैं। योग वास्तव में एक गुप्त विद्या थी, रहस्यमयी साधना थी क्योंकि इसमें आध्यात्मिक शक्ति का अक्षय भण्डार छिपा हुआ है। अतः साधक-साधिकाएँ ही प्रायः इस पथ पर चलते थे।

योग में शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक क्षमता बढ़ाने की भी अनुपम शक्ति निहित है। योग का यह स्वरूप ही आज विश्व में महिमा मण्डित और स्थापित हो रहा है। योग का यह स्वरूप भी स्वागत योग्य है लेकिन यह योग का सर्वांगी नहीं एकांगी पक्ष है, बाह्य एवं स्थूल रूप है। उसका आन्तरिक, सूक्ष्म, मूल और वास्तविक स्वरूप तो वही है जिसका सदुपयोग, चिन्तन-मनन प्राचीन भारतीय ऋषि और साधना पथ के पथिक करते रहे हैं। इस पक्ष पर चलने से योग से होने वाला शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक विकास तो स्वतः ही होता रहता है। योग के आध्यात्मिक पक्ष की उपेक्षा करके वह सब कुछ प्राप्त नहीं किया जा सकता जिसके लिए इसकी खोज हुई थी।

योग से केवल व्यक्तिगत लाभ प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं है। जब तक योग से विश्व भर में आध्यात्मिक चेतना का प्रसार न होगा तब तक योग एक सीमित क्षेत्र में ही केन्द्रित रहेगा। आतंकवाद, नास्तिकता, बाजारवादी सोच, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, सामाजिक विषमता, वर्ग संघर्ष इन सबका उपचार अध्यात्मपरक योग के पास ही है न कि व्यायामपरक योग के पास। अतः आवश्यकता योग के सम्पूर्ण स्वरूप को आत्मसात करने की है न कि उसके एकांगी स्वरूप से संतोष करने की। केवल आसन प्राणायाम ही योग नहीं है; बल्कि यम, नियम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि भी योग के अभिन्न अंग हैं, जिन्हें आज उपेक्षित किया जा रहा है अथवा भ्रान्तिवश गौण समझ लिया जाता है। महर्षि पतंजलि प्रणीत इस सम्पूर्ण अष्टांग योग को अपनाने से ही योग की महत्ता, उपादेयता, क्षमता और चमत्कार स्थिर रह सकेंगे।

आध्यात्मिक चेतना के अभाव में ही आज सर्वत्र त्राहि माम् की स्थिति बनी हुई है और राजनीति, समाज, प्रशासन, न्यायालय, धर्म, शिक्षा, सेवा आदि क्षेत्रों में असमानता, विषमता, विद्रूपता एवं हाहाकार दृष्टिगोचर हो रहा है। अतः योग को अपनाना हर युग की विवशता नहीं, अपरिहार्यता रही है।

योग के सम्बन्ध में एक बड़ी भारी भ्रान्ति यह बनी हुई है कि इसे साधने के लिए घर-बार व दीन-दुनिया छोड़ कर जंगलों और पहाड़ों के शरणागत होना पड़ता है। योग-साधना के लिए यह कोई अनिवार्य शर्त या बन्धन नहीं है। गृहस्थ में रहकर योग साधना करने वालों की भी एक लम्बी सूची है। श्री लाहिड़ी महाशय (१८२८-१८९५)

www.thearyasamaj.org

इस युग के एक महान् योग साधक थे जो गृहस्थी थे। निराहारी योगिनी मां गिरिबाला भी गृहस्थी थी। स्वामी विशुद्धानन्द परमहंस भी गृहस्थी थे। लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं कि योगाभ्यास के लिए वन्य प्रदेश और पहाड़ों का कोई औचित्य ही नहीं है। औचित्य है, विशेष औचित्य है उन लोगों के लिए जो गृहस्थी नहीं हैं अथवा जिन्होंने गृहस्थ त्याग दिया है। सम्पूर्ण मानव समुदाय तो गृहस्थ त्याग नहीं सकता। जो गृहस्थ में जाने-अनजाने रहना चाहते हैं उनके लिए भी योग साधना का मार्ग खुला हुआ है। एक गृहस्थी सुख तो धन से बटोर सकता है लेकिन शान्ति के लिए तो उसे योग व अध्यात्म का आश्रय लेना ही होगा।

बाजारवादी सोच को बदलने के लिए भी योग के शरणागत होना अत्यावश्यक है। संकीर्णता व विषमता से प्रभावित जीवन शैली को समष्टिपरक बनाने हेतु भी योग का आलम्बन आवश्यक है। अतः गृहस्थ लोगों के लिए भी योग उतना ही आवश्यक है, जितना कि विरक्त लोगों के लिए। जो लोग केवल व्यायाम के रूप में योग को अपना रहे हैं, वह अपनी जगह महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह एक आदर्श जीवन की स्वागत योग्य शुरुआत है। बीज से ही वट वृक्ष बनने की सम्भावना बनती है। अच्छा संस्कार किसी भी रूप में ग्रहण क्यों न किया जाये, आगे चलकर अच्छे फल देता है।

गृहस्थ जीवन को त्याग कर किसी एकान्त स्थल पर योग-साधना करना इसलिए कुछ साधकों के लिए अनिवार्य हो जाता है क्योंकि गृहस्थ में उन्हें वांछित वातावरण नहीं मिलता। समाज में अनासक्त जीवन जीने की सम्भावना उन्हें कम नजर आती है तथा पर्यावरण में आध्यात्मिक अनुभूतियाँ प्राप्त करने के अत्यल्प अवसर ही उन्हें मिल पाते हैं। लेकिन जिन साधकों को पूर्व जन्म के सात्विक संस्कार प्राप्त होते हैं, जिनकी भाव-भूमि परिपक्व होती है, जिनका संकल्प और इच्छा-शक्ति दृढ़ होती है, विरक्ति और अनासक्ति योग जिन्हें प्रकृतिगत प्राप्त रहता है उन्हें गृहस्थ, समाज या इस लौकिक जगत् को त्यागने अथवा उससे पलायन करने की आवश्यकता नहीं रहती। अतः यह व्यक्ति विशेष की आन्तरिक गुण, प्रवृत्ति, पर्यावरण की स्थिति पर निर्भर करेगा कि उसे योग-साधना के लिए किस मार्ग का आलम्बन करना है।

योग किसी एक जन्म में नहीं सधता। पिछले व वर्तमान जीवन की संस्कारगत कलुषता को धोने के लिए, योग्य गुरु की तलाश करने के लिए, योग साधना के लिए वांछित मानसिकता बनाने के लिए तथा साधना का पथ प्रशस्त करने के लिए एक जीवन दाँव पर लगाने से कुछ नहीं होता यद्यपि इसका भी कम महत्व नहीं है। अष्टांग योग के प्रथम दो अंगों- यम और नियम का पालन करना ही आज के वातावरण में इतना कठिन है कि पूरा एक जीवन तो इन्हीं पर खर्च होकर रह जाता है जबकि हकीकत यह है कि योग को व्यायाम या कसरत समझने वाले साधक या इसे कराने वाले शिक्षक, गुरु या तथाकथित योगिजन योग के इन दो प्रवेश द्वारों का न तो अर्थ समझते हैं और न ही समझना चाहते हैं, उनका पालन करना तो अलग रहा। ऐसे अधूरे योग से शारीरिक, मानसिक या बौद्धिक स्तर पर साधक को कुछ परिवर्तन महसूस होता है तो उसे ही सकारात्मक चेतना का या रचनात्मक मानसिकता का नाम दे दिया जाता है, जबकि यम-नियम का पालन किये बिना यह स्थिति प्राप्त करना असम्भव है।

महर्षि पतंजलि ने अष्टांग योग को जिस क्रम से प्रस्तुत किया है, उस को भंग करने कराने का अधिकार न गुरु को है और न ही शिष्य को। इस क्रम को भंग करने से साधक को अभीष्ट फल की प्राप्ति योग साधना से नहीं होगी। शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ यदि साधक को मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक=आध्यात्मिक विकास प्राप्त करना है तो उसे अनिवार्य रूप से तथा पूरे मनोयोग से अष्टांग योग के क्रम को अपने दृष्टि-पथ में रख कर उसका पालन करना होगा। आठ क्रम अलग-अलग स्तर अथवा सारिणी नहीं हैं कि क्रमशः एक स्तर का पालन करके दूसरे की प्राप्ति का प्रयास करें और पिछले को भूल जाएँ। ये आठों क्रम एक समुच्चय है। आदि और अन्त का यहाँ भेद नही है बल्कि इन आठ जीवन मूल्यों को एक साथ जीना होता है। समाधि अवस्था को प्राप्त करने वाले साधक के लिए भी यम-नियम का पालन करना आवश्यक बना रहता है। मूल को छोड़कर शीर्ष को प्राप्त करने वाला तर्क यहाँ नही चलता। अतः योग साधक को सतत् सावधान रहकर अष्टांग योग के क्रम-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि को न तो भूलना चाहिए और न ही उसका अतिक्रमण करना चाहिए।

यम-नियम चूँकि अष्टांग योग का मूल आधार हैं अतः साधक-साधिकाओं को इस पर भी योगाभ्यास के साथ-साथ बल देना चाहिए। यम पाँच हैं और नियम भी पाँच ही हैं। पाँच यम हैं-अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। पाँच नियम हैं-शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान। यम, नियम, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार योग के बहिरंग साधन हैं। योग के अन्तरंग साधन हैं-धारणा, ध्यान और समाधि जिनको संयम भी कहते हैं।

www.thearyasamaj.org

 पण्डित चमूपति जी की अमूल्य कृति 'संध्या-रहस्य' का धारावाह प्रकाशन

# शंकर शंभु शिव को नमस्कार

वास्तविक तत्त्व से भटकी हुई आँख! उस अदृश्य दृश्य को देख। सांसारिक स्वरों पर मोहित श्रोत्र! उस अश्रुत की श्रुति को सुन! अरी! अण्ड बण्ड बककर वृथा चलने वाली जिह्वा! आत्म नाश न कर! उस परम पवित्र ओ३म् का उच्चारण कर और पवित्र हो! कह! कह!! और कह!

**फूलों में तेरी शोभा कांटों में तेरा दर्शन। बगिया में तुझको ढूंढूं या बन में खोजूं भगवन्।।**

## उपस्थान मंत्र २

**ओं उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्।।२।।** यजु० ३३/६१

**अन्वयः** = उदुत्यं जातवेदसं देवं सूर्यम् विश्वाय (विश्वेषां) दृशे केतवः उद्वहन्ति।

**अर्थ** - (त्यं) उस प्रसिद्ध (जातवेदसं) सकल ब्रह्माण्ड की सुध रखने वाले यद्वा कार्य कारण की विज्ञप्ति कराने वाले (देवं) प्रकाशस्वरूप (सूर्य) सर्वव्यापक ओ३म् को (विश्वाय) सब के (दृशे) देखने के लिए (केतवः) झण्डियाँ (उत् वहन्ति) हिलती हैं।

मुमुक्षु इच्छा रूपी यान पर चढ़ चुका। उसे मार्ग की आवश्यकता है। नेता की खोज में मतवारा फिरता है। मोक्षधाम पहुंचना है, कहाँ जाए? दर्शनामृत के पिपासो! तू चिन्ता न कर। तू साधनों का टिकट लेकर यान में आया है। तुझे पहुंचाने का उत्तरदायित्त्व औरों का है। गाड़ी नियत स्थान को जा रही है।

वह देख! सीटी बजी। घंटी हुई। झण्डी हिली। गाड़ी मार्ग में है। कौन सा मार्ग? वेद का। एक एक ऋचा को पढ़। परमात्मा की द्योतिका है।

कोई उत्सव है? घर-बार, गली-बाजार, नीचे- ऊपर, अन्दर-बाहर झण्डियाँ ही झण्डियाँ हैं। इनके संकेत को समझ और इनके पीछे जा। तारों की दीपमाला किसके स्वागत के लिए है? केवल आज नहीं, रोज! प्रभात की छटा किस वैज्ञानिक का आविष्कार है। चन्द्रकला और सूर्यप्रभा किस शिल्पी का शिल्प है? समुद्र गला फाड़ फाड़ कर चिल्लाता है। बादल गरज गरज कर घोषणा करते हैं। किसकी? जहाँ पक्षी पर न मारे। पशु पग न हिलाएँ। न कौओं की कांय कांय न पत्तो की सांय सांय। वहाँ भी तो निःशब्द प्रकृति मौन भाषा में स्व स्वामी का स्मरण कराती है। तू न देखे और न सुने तो किसका अपराध! देखने वाली आँख खोल। मौन भाषा में नाद होता है 'रंगी के रंग'

**यह प्रियतम के मेल का आनन्द क्षणिक न हो। बहुत काल तक रहे। उस पूर्ण प्रभ की द्युति आँखों के लिए सदैव दीपक हो। सारे इन्द्रिय स्वस्थ बने रहें। जो देखा जाए वह जीवन में आए।**

## उपस्थान मंत्र ३

**ओं चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आ प्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा।।३।।**

यजु० ७/ ४१

**अन्वयः** = चित्रं देवानाम् (देवान्) उत् अगात् (सः) अनीकं (अस्ति) मित्रस्य वरुणस्य अग्नेः चक्षुः (अस्ति) द्यावा पृथिवी (द्यावापृथिव्याः) अन्तरिक्षं आ आप्रा। जगतः तस्थुषश्च सूर्य आत्मा (अस्ति) स्वाहा।

**अर्थ**= (चित्रं) विचित्र (देवानाम्) प्रकाशमानों और दिव्यस्वभाव युक्तों में (उत् अगात्) भली प्रकार प्रकट (अनीकं) बलस्वरूप (मित्रस्य) हितकारियों वा सूर्य का (वरुणस्य) श्रेष्ठ पुरुषों वा जल का (अग्नेः) ज्ञानियों वा अग्नि का (चक्षुः) मार्गदर्शक वा द्रष्टा (द्यावापृथिवी) प्रकाशयुक्त लोकों और प्रकाशशून्य विस्तृत लोकों (अन्तरिक्षं) आकाश में (आ प्रा) व्यापक (जगतः) चलने वालों (च) और (तस्थुषः) न चलने वाले जड़ पदार्थों का (आत्मा) आत्मा और (सूर्यः) व्यापक है। (स्वाहा।) यह वाणी अति सुन्दर है अथवा यह कामना पूर्ण हुई।

मुमुक्षु मोक्ष धाम में है। अभी देखा था, उसे इच्छा थी। परन्तु साधनयुक्त इच्छा शक्तिशालिनी होती है। वही

www.thearyasamaj.org

इच्छा सफलता में परिणत हुई।

वेद मार्ग निकल आया। संसार के एक एक अणु ने झण्डी का काम दिया। और पथिक वहाँ पहुंचा जहाँ जाना अभीष्ट था। उस जगह का अनुभव भी सुन लो।

कहाँ वह प्रकृतिमय असत् जगत्! कहाँ आत्मिक प्रभा के कौतुकमय चमत्कार! वहाँ कलह यहाँ शांति। वहाँ तम यहाँ सत्। वहाँ वैर यहाँ प्रेम। मुमुक्षु चकित है। विवश मुख से निकलता है- 'चित्रम्'। और कोई वाक्य ही नहीं, जिसमें जो देखा है, दिखाए।

आज सकल संसार दिव्य है। क्योंकि दिव्य दृष्टि से देखा गया। वस्तु वस्तु में परमदेव की झलक! अणु अणु में विभु ईश की चमक! वसन्त ऋतु में हरे वृक्ष भी पीले दिखते हैं। हरे चश्मे में आकाश भी हरा, पृथिवी भी हरी। धूप भी हरी और छाया भी हरी। कल यही जल था, उसकी उमड़ से कांपे जाते थे। यही अग्नि थी, उसकी उमड़ से कलेजा थर्राता था। यही सूर्य था जिसकी किरणें आग्नेय वाण थीं। आज दृष्टि के परिवर्तन से जल सौम्य है, अग्नि पावक और सूर्य ज्याति का पुंज! ब्रह्माण्ड ब्रह्ममय है। व्यापक आकाश उससे व्याप्त है। दृढ़ पृथिवी उसी से सुदृढ़ है। वही तारों की द्युति, वही चन्द्र सूर्य की ज्योति! चलतों में उसकी गति, स्थितों में उसकी स्थिति। वही 'नेत्र' होकर अग्नि का मार्गदर्शक, वही रस होकर वरुण (जल) का रसवर्धक और वही तेज होकर सूर्य का सविता, वही सर्ववित् उपदेशकों का उपदेष्टा। अग्नि को कौन कहता है-'ऊपर जा' और जल को कौन सिखाता है-'निम्न स्थल पर बह।' वैज्ञानिक कहेगा- प्रकृति का नियम है। साधु! वही तो नियमों का नियामक है।

वास्तविक तत्त्व से भटकी हुई आँख! उस अदृश्य दृश्य को देख। सांसारिक स्वरों पर मोहित श्रोत्र! उस अश्रुत की श्रुति को सुन! अरी! अण्ड बण्ड बककर वृथा चलने वाली जिह्वा! आत्म नाश न कर! उस परम पवित्र ओ३म् का उच्चारण कर और पवित्र हो! कह! कह!! और कह!

फूलों में तेरी शोभा कांटों में तेरा दर्शन।
बगिया में तुझको ढूंढूं या बन में खोजूं भगवन्।।

**उपस्थान मंत्र ४**

**ओं तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शत ँ जीवेम शरदः शतं श‍ृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।४।।**

यजु० ३६/२४

अन्वयः = तत् चक्षुः देवहितं शुक्रं पुरस्तात् उत् चरत्। शतं

## आज सकल संसार दिव्य है। क्योंकि दिव्य दृष्टि से देखा गया। वस्तु वस्तु में परमदेव की झलक! अणु अणु में विभु ईश की चमक!

शरदः पश्येम शतं शरदः जीवेम शतं शरदः श‍ृणुयाम शतं शरदः प्रब्रवाम शतं शरदः अदीना स्याम शतात् शरदः च भूयः (अपि एवम् स्यात्)

**अर्थ** = तत्= वह, चक्षुः =सर्वदृक्, देवहितं= देवों का हितकारी, पुरस्तात्= सृष्टि से पूर्व का अजन्मा, निर्विकार, शुक्रं= पूर्ण बल, उत् चरत्= विचरता था, उसको देखें, शतं शरदः =सौ वर्षो तक अर्थात् बहुत काल तक। जीवेम शतं शरदः = बहुत काल तक जीवें, श‍ृणुयाम शतं शरदः = बहुत काल तक सुनें, प्रब्रवाम शतं शरदः= बहुत काल तक बोलें। अदीना स्याम =हम स्वतंत्र हों अर्थात् किसी के दीन मोहताज न हों। और शतात् शरदः =सौ वर्ष से, च भूयः= अधिक भी ऐसा हो।

परमात्मा का 'देवहितं' तथा 'चक्षुः' इत्यादि होना पीछे दिखाया जा चुका है। उपस्थान मंत्र १ में 'उत्तरं' आया था, यहाँ 'पुरस्तात्' आया है। इसका अर्थ है -'जो सृष्टि से पूर्व हो और उसके पश्चात् रहे।' यों तो जीव भी अनादि और अनन्त है और प्रकृति भी। परन्तु भेद यह है कि जहाँ यह दो भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में आते हैं, परमात्मा एक रूप रहता है। जीव कभी बन्धन में, कभी मुक्त, ब्रह्म मुक्त स्वभाव होने से सदैव मुक्त। प्रकृति कभी कारण कभी कार्य। परमात्मा सदैव कारण (निमित्त)

ऐसे शुद्ध बुद्ध सर्वदृक् देवहित के दर्शन से कृतार्थ हो जीव की अभिलाषा है कि यह सुख, यह प्रियतम के मेल का आनन्द क्षणिक न हो। बहुत काल तक रहे। उस पूर्ण प्रभ की द्युति आँखों के लिए सदैव दीपक हो। सारे इन्द्रिय स्वस्थ बने रहें। जो देखा जाए वह जीवन में आए। जो सुना जाए वह उपदेश बने। आँखों में दृष्टि रहे, कानों में श्रुति रहे। मुख में वाक् नासिका में प्राण हों, सौ के हों चाहे और भी अधिक के। बुद्धि में वृद्ध हों, शक्ति में युवा और सरलता में शिशु (बालक)

वेद में दीर्घ जीवन की कई बार प्रार्थना की है। जीवन कर्ममय हो और उससे लाभ उठाया जाए तो इससे उत्तम कल्याण की वस्तु और है ही नहीं।

**गुरुमंत्र तीसरी बार**

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

www.thearyasamaj.org



# विश्व की प्रथम शल्य चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद

❑ आयुर्वेद शिरोमणि डॉ० मनोहरदास अग्रावत एन०डी० प्राकृतिक चिकित्सक

ईसा से ६०० वर्ष पूर्व और सन् १००० ईस्वी तक का समय भारतीय चिकित्सा विज्ञान के लिए एक स्वर्णिम युग था। आत्रेय, जीवक, चरक और वाग्भट् ट जैसे बहुत से यशस्वी चिकित्सा शास्त्रियों ने भारत की पावन भूमि पर जन्म लिया।

प्राचीन काल में आयुर्वेद ही चिकित्सा विज्ञान के रूप में विद्यमान था- ऐसा निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है। सामान्य शिक्षा के साथ तत्कालीन गुरुकुलों एवं विद्यापीठों में तकनीकी एवं चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा का समुचित प्रबन्ध था। आयुर्वेद ऋग्वेद अथवा अथर्ववेद का उपवेद या उपांग होने के कारण उतना ही प्राचीन है जितनी सृष्टि।

आयुर्वेद आठ अंगों में विभक्त है। प्रथम कार्य चिकित्सा (इन्टरनल मेडिसिन) और द्वितीयः शल्य शास्त्र (जनरल सर्जरी) आज मेरी यह प्रस्तुति इसी शल्य चिकित्सा पर शांतिधर्मी के पाठकों को भेंट है।

आज से लगभग अढाई हजार वर्ष पूर्व की बात है, काशी में गंगा तट से थोड़ी दूर एक पाठशाला थी। वहाँ आयुर्वेद की शिक्षा दी जाती थी, दूर-दूर से विद्यार्थी वहाँ आते और शल्य चिकित्सा का ज्ञान प्राप्त करते। काशी के राजा महान् चिकित्सा शास्त्री दिवोदास की देख रेख में सुश्रुत ने चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की और वे अपने समय के अद्वितीय शल्य चिकित्सक हुए।

उक्त काशी की पाठशाला के आचार्य थे- महर्षि सुश्रुत। शल्य चिकित्सक के रूप में उनका यश चारों दिशाओं में दूर-दूर तक फैला हुआ था। वे स्वयं काशी के राजा दिवोदास के शिष्य थे। दिवोदास को भगवान धनवंतरि का अवतार कहा गया है।

अपने जीवन काल में महर्षि सुश्रुत ने बहुत सी नई शल्य तकनीकें विकसित कीं जो आगे चलकर बहुत से शल्य चिकित्सकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी। इनके द्वारा रचित चिकित्सा ग्रंथ- 'सुश्रुत संहिता' एक महान ग्रंथ है यह ग्रंथ इस तथ्य का जीवन्त प्रमाण है कि प्राचीन भारत के चिकित्सक चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में आज के समय से बहुत आगे थे। सुश्रुत संहिता से हमें शल्य मिलाकर १२० अध्याय हैं और इन्हें छः भागों में बांटा गया है-

(१) सूत्र स्थान (२) निदान स्थान (३) शरीर स्थान (४) चिकित्सा स्थान (५) कल्प स्थान (६) उत्तर स्थान। इस ग्रंथ में शल्य चिकित्सा की विधियों और उसमें काम आने वाले यंत्रों तथा शस्त्रों के बारे में व्यापक जानकारी दी गई है।

शरीर के किसी भाग में मवाद (पीप) पड़ जाने पर चीरा लगाना आवश्यक होता है, यह महत्त्वपूर्ण तथ्य सुश्रुत से छिपा न था। उन्होंने इस बारे में स्पष्ट जानकारी दी है। कि इस स्थिति में चीरा कैसे और कहाँ लगाएँ। इसी तरह जब शरीर के कुछ अंग जल वृद्धि के कारण फूल जाएं तो उनका जल सूई द्वारा कैसे खींच लेना चाहिए, यह विधि भी उपयुक्त रूप से बतलाई गई है। मूत्राशय की पथरी, भगन्दर और बवासीर के ऑपरेशन और मोतिया बिंद की शल्य क्रिया के साथ-साथ जरूरत पड़ते पर मां के गर्भ से चीरा लगाकर शिशु को जन्म देने की शल्य क्रिया और दन्त चिकित्सा तथा अस्थि (हड्डी) चिकित्सा की बारीकियों का अनूठा वर्णन भी 'सुश्रुत संहिता' में मिलता है। इसके अतिरिक्त काया शृंगार (प्लास्टिक सर्जरी) से जुड़े तरह-तरह के ऑपरेशन भी विस्तार से वर्णित हैं।

सुश्रुत संहिता में शल्य यंत्रों की संख्या १०१ बतलाई गई है। इन यंत्रों को हिंस्रपशु तथा पक्षियों के मुंह के आकार के अनुसार नाम दिये गये है, जैसे सिंहमुख (सिंह के मुंह जैसा) गृध्रमुख (गिद्ध के मुख जैसा) मकरमुख (मगर के मुख जैसा) आदि। ये यंत्र आधुनिक शल्य यंत्रों से किसी भी तरह कम न थे। इसके साथ ही २० और शल्ययंत्र भी वर्णित हैं। इनके नाम हैं- मंडलाग्र, करपत्र, मुद्रिका, बहिमुख आदि। ये शल्य औजार प्रायः लौह धातु या चाँदी के बनाये जाते थे। इन्हें इस ढंग से बनाया जाता था कि इनकी धार कभी कमजोर न पड़े और इनमें कभी जंग न लगे। इन्हें रखने के लिए खासतौर से लकड़ी के डिब्बे तैयार किये जाते थे।

टाँके लगाने के लिए त्वचा और विभिन्न ऊतकों की मोटाई और रचना को ध्यान में रखते हुए तरह-तरह के धागे भी विकसित किये गए थे। कुछ का आधार रेशम की डोर होती थी तो कुछ सूत के बनाए जाते थे। कुछ चमड़े से

www.thearyasamaj.org

तैयार किये जाते थे तो कुछ घोड़ों के बालों से। इसी प्रकार कई किस्म की सुईयाँ भी उपयोग में लाई जाती थीं-कुछ मोटी, कुछ पतली, कुछ अधिक घुमाव लिए हुए तो कुछ कम और कुछ बिल्कुल सीधी।

उन दिनों तरह-तरह की रूई, रेशम और मलमल से बनी पट्टियों का भी प्रचलन था।

दुर्घटनाओं में अथवा अस्त्र-शस्त्र से कट गई आंतों के दो किनारों को एक दूसरे से जोड़ने के लिए सुश्रुत ने एक विलक्षण तकनीक खोज निकाली थी। इसके लिए वे एक किस्म के चींटों का उपयोग किया करते थे। फटी हुई आंत के दो किनारों को साथ मिलाकर उसपर चींटे छोड़ दिए जाते। वे चींटे अपने दांतों से उसपर चिपक जाते जिससे फटी हुई आंत के दो किनारे आपस में मिल से जाते। तब चींटों का शेष भाग काट कर अलग कर दिया जाता और उदर के बाहरी ऊतकों और त्वचा पर टाँके कस दिये जाते। कुछ ही दिनों में आँत का घाव भर जाता। साथ ही चींटों का सिर भी ऊतकों में अपने घुलमिल जाता था। आजकल शल्य चिकित्सक शरीर के भीतरी अंगों के टाँके लगाने के लिए भेड़ की आंत से बनाए गए धागों का उपयोग करते हैं। उद्देश्य यह रहता है कि टाँके भीतर ही घुल मिल जाएँ जिससे टाँके निकालने के लिए कम से कम शरीर का वह भाग दोबारा न खोलना पड़े।

शल्य क्रिया के दौरान रोगी को कष्ट न हो, इसके लिए कुछ ऐसी सक्षम जड़ी बूटियाँ भी खोज निकाली गई थीं जिनके देने से रोगी गहरी नींद में सो जाता था। सुश्रुत संहिता में शल्य चिकित्सा के हर महत्त्वपूर्ण पहलू पर विस्तृत जानकारी दी गई है। जैसे ऑपरेशन के पश्चात् क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिये, रोगी का आहार कैसा होना चाहिए, घाव भर जाए इसके लिए कौन-कौन सी औषधियाँ देनी चाहिएँ। औषधि विज्ञान के बारे में भी व्यापक जानकारी थी, बहुत सी जड़ी-बूटियों की खोज की गई थी, साथ ही रसायन भी खोज निकाले थे। ये रोगी का दु:खदर्द दूर करने के काम आते थे।

मानव शरीर के भीतरी अंगों की जानकारी प्राप्त करने के लिए महर्षि सुश्रुत ने एक अनूठी विधि खोज निकाली थी। मृत शरीर को पहले किसी वजनदार वस्तु के साथ बाँधकर किसी छोटी सी नहर में डाल दिया जाता था। एक सप्ताह पश्चात् जब बाहरी त्वचा और ऊतक फूल जाते तब झाड़ियों और लताओं से बने बड़े-बड़े ब्रुशों द्वारा उन्हें शरीर से अलग कर दिया जाता था जिससे शरीर के आंतरिक भागों की रचना स्पष्ट हो जाती थी।

शल्यकला का प्रारंभिक प्रशिक्षण देने के लिए वे अपने शिष्यों को कन्दमूल, फलफूल, पेड़-पौधों की लताओं, पानी से भरी मशकों, चिकनी मिट्टी के ढाँचों और मलमल से बने मानव पुतलों पर दिनो-दिन अभ्यास करवाते। चीरा कैसे लगाना है, उसे कितना लम्बा, कितना गहरा रखना है इसका अभ्यास प्राप्त करने के लिए शिष्यों को ककड़ी, करेला, तरबूज जैसे फलों और सब्जियों पर कई दिनों तक अभ्यास करना पड़ता था। किसी घाव की गहराई कैसे पहिचानें और उसे भरने के लिए क्या-क्या प्रणाली अपनाएं इसका प्रशिक्षण दीमक खाई लकड़ी के द्वारा दिया जाता था जिससे कि शिक्षार्थी रुग्ण शरीर की स्थिति का सही अंदाजा लगा सकें। अभ्यास के दौरान कमल के फूल की डंडी, शिरा (रक्तवाहिनी) बन जाती जिसे शिष्य को सूई द्वारा बेंधना पड़ता था। इसी तरह टाँका लगाने का प्रशिक्षण तरह-तरह के कपड़ों और चमड़े पर दिया जाता। खुरदरा चमड़ा सिर पर से बाल न हटाये गये हों उस पर खुरचने की कला सिखाई जाती थी। पट्टी बांधने का ज्ञान देने के लिए मानव पुतलों का सहारा लिया जाता था।

इस परीक्षण में उत्तीर्ण होने के पश्चात् ही शिष्य के प्रशिक्षण का दूसरा चरण शुरू होता। अब उसे किसी कुशल शल्य चिकित्सक की देख-रेख में रख दिया जाता था। वह तरह-तरह की शल्य क्रियाएं (ऑपरेशन) देखता और उनसे सीखता जाता, फिर जब वह पूरी तरह परिपक्व हो जाता तब उसे गुरु की देखरेख में स्वयं शल्य क्रिया करने की अनुमति दी जाती थी। इस तरह पूर्ण प्रशिक्षण और अनुभव प्राप्त कर ही वह पाठशाला से बाहर निकलता था।

ईसा से ६०० वर्ष पूर्व और सन् १००० ईस्वी तक का समय भारतीय चिकित्सा विज्ञान के लिए एक स्वर्णिम युग था। आत्रेय, जीवक, चरक और वाग्भट्ट जैसे बहुत से यशस्वी चिकित्सा शास्त्रियों ने भारत की पावन भूमि पर जन्म लिया। काशी के साथ-साथ नालन्दा और तक्षशिला के प्राचीन विश्व-विद्यालय भी सैकड़ों वर्ष तक उच्च कोटि की शिक्षा के लिए विश्वविख्यात रहे। यहाँ दूर-दूर से शिक्षार्थी आते और चिकित्सा विज्ञान में निपुण होकर मानव कल्याण की प्रतिज्ञा लेते।

महर्षि सुश्रुत जितने बड़े शल्य चिकित्सक थे, उतने ही बड़े गुरु भी थे। आप मूलत: शल्य चिकित्सक थे किन्तु उन्होंने क्षय रोग, कुष्ठ रोग, मधुमेह, इनजाइमा एवं विटामिन 'सी' की कमी से होने वाले रोग 'स्कर्वी' के उपचार की महत्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत की।

मनोहर आश्रम, स्थान उम्मैदपुरा
पो० तारापुर (जावद)-४५८३३० जिला नीमच (म०प्र०)
चलभाष ०८९८९७ ४२०४७

www.thearyasamaj.org

## जानते हो! –रवीश आर्य

◆सानमारिनो विश्व का ऐसा देश है जहाँ दो राष्ट्रपति होते हैं।

◆ब्राजील के जंगलों में खट्टा शहद मिलता है।

◆विश्व में कुल 2792 भाषाएँ बोली जाती हैं।

◆स्पेन में कपड़ों पर अख़बार छपता है।

◆विश्व में रूस ऐसा देश है जिसके एक भाग में शाम और एक भाग में दिन होता है।

◆चीन की सीमा को तेरह देशों ने घेर रखा है।

◆हमारे द्वारा उपयोग किए जाने वाले नमक में सोड़ियम और क्लोरीन नामक दो तत्व विष होते हैं जो स्वास्थ्य के लिए अत्यंत ही घातक विष होते हैं। इसलिए नमक का अधिक उपयोग घातक होता है।

◆यार्कशायर (इंग्लैंड़) में टाम वेड़र नामक व्यक्ति की नाक साढ़े सात इंच लम्बी थी।

## हास्यम् –आस्था गुड्डू

❑जादूगर– बच्चो, देखो, अभी इस डिब्बे में मैं रुमाल डालूंगा। मंत्र पढ़कर उसे कबूतर बना दूंगा।
एक बच्चा– यह कौन सी बड़ी बात है। हमारे टीचर तो बिना मंत्र पढ़े ही हमें मुरगा बना देते हैं।

❑एक बार दो पागलों में विवाद हो गया। वे एक दूसरे को पागल बता रहे थे। एक ने दूसरे से कहा– अच्छा तुम्हारा जन्म कब हुआ था? दूसरा बोला– रविवार को। पहला– देखो है ना पागल दूसरा– कैसे? पहला– रविवार को तो छुट्टी होती है।

❑एक कुत्ता एक छोटे से बच्चे का मुंह और हाथ चाटने लगा। बच्चा डर के मारे चीख उठा। उसकी मां बाहर निकली और बोली– ''क्या हुआ कुत्ते ने काटा तो नहीं।'' बच्चे ने भोलेपन से कहा– 'नहीं, अभी तो चख रहा है।'

❑सोनू– आज का पेपर कैसा हुआ?
मोनू – २० प्रश्न थे जिनमें से १९ आते नहीं थे और एक छूट गया।

❑आशु – दीदी, मेरे हाथों में आज मेहंदी मत लगाना।
प्रत्यू– क्यों?
आशु – अखबार में लिखा है कि पुलिस लोगों को रंगे हाथों पकड़ रही है।

❑पिता– बेटे तुम इतिहास में फैल कैसे हो गए?
अनु– क्या करूँ पिताजी, उसमें तो सारी बातें मेरे पैदा होने से भी पहले की पूछी गई थी।

# बाल वाटिका

सम्पादक : सुमेधा

## प्रहेलिका:

❖छोटी सी एक बावड़ी–
हवा का अन्त न पार।
नीर चढ़ा आकाश को–
बरस रहे अंगार।।

❖राजा जी के बाग में–मोती गिरे अनेक,
रानी जो गई बीनने, मोती मिला न एक––

❖यहाँ नहीं, वहाँ नहीं– बिकता है बाजार नहीं–
छीलो तो छिले नहीं–फोड़ो तो गुठली नहीं–

❖सात रंग की एक चटाई–
आकाश में पड़ी दिखाई–
सात रंग हैं मन को भाते–
देखकर बच्चे शोर मचाते।

❖अन्त कटे तो कल बनता मध्य कटे तो कम।
मुझ बिन लिखले नाम अपना बोलो किसमें है ये दम।

❖काम आऊँ मैं सैर में अपनों में या गैर में।
मेरी कितनी इज्जत है रहता सबके पैर में।।

स्टोव, ओस, ओला, इन्द्रधनुष, कलम, जूता

## विचार कणिका: ❑प्रतिष्ठा

❍जब भी कोई भलाई का काम करने का भाव मन में आये तो उसे कल पर मत टालना और अगर बुराई का भाव मन में आये तो कल पर अवश्य टाल देना तभी कल्याण होगा।।

❍सत्य को जानते बहुत हैं किन्तु मानता वही है जो विशेष शक्तिमान है।

❍भूकंप तो मकान को तोड़ता है, परन्तु वैर विरोध तो परिवार को ही तोड़ देता है।

❍तोड़ फोड़ तो सभी लोग कर सकते हैं, पर बना कितने सकते हैं?

❍दो बात आदमी की कमजोरी प्रकट करती हैं– जहाँ बोलना हो वहाँ चुप रहना और जहाँ चुप रहना हो वहाँ बोलना।

❍यदि तुम मुस्कराते हो तो दुनिया मुस्कराती है और यदि तुम मायूस, उदास, हताश व निराश होते हो तो दुनिया तुम्हें उदास सी दिखने लगती है।

www.thearyasamaj.org

प्रेरक कथा

# लकड़ी का कटोरा

एक वृद्ध व्यक्ति अपने बहु-बेटे के यहाँ शहर में रहने गया। वह अत्यंत कमजोर हो चुका था। उसके हाथ कांपते थे और दिखाई भी कम देता था। वे एक छोटे से घर में रहते थे। पूरा परिवार और उसका चार वर्षीय पोता एक साथ डिनर टेबल पर खाना खाते थे। लेकिन वृद्ध होने के कारण उस व्यक्ति को खाने में बड़ी दिक्कत होती थी। कभी मटर के दाने उसकी चम्मच से निकल कर फर्श पर बिखर जाते तो कभी हाथ से दूध छलक कर मेजपोश पर गिर जाता।

बहु-बेटे एक-दो दिन यह सब सहन करते रहे पर अब उन्हें इस बात से चिढ़ होने लगी। 'हमें इनका कुछ करना पड़ेगा' लड़के ने कहा। बहु ने भी हाँ में हाँ मिलाई और बोली- 'आखिर कब तक हम इनकी वजह से अपने खाने का मजा किरकिरा करेंगे, और हम इस तरह चीजों का नुक्सान होते हुए भी नहीं देख सकते' अगले दिन जब खाने का समय हुआ तो बेटे ने एक पुरानी मेज को कमरे के कोने में लगा दिया। अब बूढ़े पिता को वहीं अकेले बैठ कर अपना भोजन करना था। यहाँ तक कि उनके खाने के बर्तनों की जगह एक लकड़ी का कटोरा दे दिया गया था, ताकि अब और बर्तन ना टूट-फूट सकें। बाकी लोग पहले की तरह ही आराम से बैठ कर खाते और जब कभी-कभार उस बुजुर्ग की तरफदेखते तो उनकी आँखों में आंसू दिखाई देते। यह देखकर भी बहु-बेटे का मन नहीं पिघलता।

बालक भी यह सब बड़े ध्यान से देखता रहता और अपने में मस्त रहता। एक रात खाने से पहले उस छोटे बालक को उसके माता-पिता ने जमीन पर बैठ कर कुछ करते हुए देखा- 'तुम क्या बना रहे हो?' पिता ने पूछा।

बच्चे ने मासूमियत के साथ उत्तर दिया, 'मैं तो आप लोगों के लिए एक लकड़ी का कटोरा बना रहा हूँ, ताकि जब मैं बड़ा हो जाऊं तो आप लोग इसमें खा सकें' और वह पुन: अपने काम में लग गया। पर इस बात का उसके माता-पिता पर बहुत गहरा असर हुआ, उनके मुंह से एक भी शब्द नहीं निकला और आँखों से आंसू बहने लगे। वे दोनों बिना बोले ही समझ चुके थे कि अब उन्हें क्या करना है। उस रात वे अपने बूढ़े पिता को वापस डिनर टेबल पर ले आये और फिर कभी उनके साथ अभद्र व्यवहार नहीं किया।

## सबका भला करो भगवान।।

सहदेव समर्पित

आंधी हो चाहे बरसात
कभी न छोड़ो सच का साथ।।
चाहे हो कितना नुकसान,
लेकिन पूरी करो जुबान।।
हरदम रखना मन में आस,
मेहनत में रखना विश्वास।।
कभी नहीं करना अभिमान,
करना सदा बड़ों का मान।।
सज्जन का दो साथ जरूर।
दुष्ट जनों से रहना दूर।
करना परमेश्वर का ध्यान,
सबका भला करो भगवान।।

'कांटों में भी हंसना सीखो' से

## वायुयान का आविष्कार

वायुयान का इतिहास बताने वाले विज्ञान के आधुनिक ग्रंथों में राईट बंधुओं की उपलब्धि की चर्चा तो जोर शोर से की जाती है, पर भारत के उस वैज्ञानिक की कोई चर्चा नहीं की जाती जिसने राईट बंधुओं के 'राइट फलायर' से आठ साल पहले सन १८९५ में विमान बनाया, विशाल जन समुदाय की उपस्थिति में मुंबई के चौपाटी समुद्र तट पर १७ मिनट तक उसे उड़ाया और उसे १५०० फीट की ऊँचाई तक ले गया। इस वैज्ञानिक का नाम था- शिवकर लळपदे। (साभार-नवनीत)

www.thearyasamaj.org

प्रेरक कथा

# शेर या लोमड़ी

एक भिक्षुक भोजन बनाने के लिए जंगल से लकड़ियाँ चुन रहा था, तभी उसने कुछ अनोखा देखा- 'कितना अजीब है ये!' उसने बिना पैरों की लोमड़ी को देखते हुए मन ही मन सोचा। 'आखिर इस हालत में यह जिंदा कैसे है?' उसे आश्चर्य हुआ। 'और ऊपर से यह बिलकुल स्वस्थ है।' वह अपने विचारों में खोया हुआ था कि अचानक चारों ओर अफरा-तफरी मचने लगी। जंगल का राजा शेर उस तरफआ रहा था। भिक्षुक भी तेजी दिखाते हुए एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ गया और वहीं से सब कुछ देखने लगा। शेर ने एक हिरन का शिकार किया था और उसे अपने जबड़े में दबा कर लोमड़ी की तरफ बढ़ रहा था। उसने लोमड़ी पर हमला नहीं किया बल्कि उसे भी खाने के लिए मांस के कुछ टुकड़े डाल दिए। 'यह तो घोर आश्चर्य है, शेर लोमड़ी को मारने की बजाय उसे भोजन दे रहा है।' भिक्षुक बुदबुदाया, उसे अपनी आँखों पर भरोसा नहीं हो रहा था। वह अगले दिन फिर वहीं आया और छिप कर शेर का इंतजार करने लगा। आज भी वैसा ही हुआ, शेर ने अपने भोजन का कुछ हिस्सा लोमड़ी के सामने डाल दिया।

'यह भगवान् के होने का प्रमाण है!' भिक्षुक ने अपने आप से कहा। 'वह जिसे पैदा करता है उसकी रोटी का भी इंतजाम कर देता है, आज से इस लोमड़ी की तरह मैं भी ऊपर वाले की दया पर जीऊंगा, ईश्वर मेरे भी भोजन की व्यवस्था करेगा' ऐसा सोचते हुए वह एक वीरान जगह पर जाकर एक पेड़ के नीचे बैठ गया।

पहला दिन बीता, पर कोई वहाँ नहीं आया। दूसरे दिन भी कुछ लोग उधर से गुजर गए पर भिक्षुक की तरफ किसी ने ध्यान नहीं दिया। इधर बिना कुछ खाए-पीये वह कमजोर होता जा रहा था। इसी तरह कुछ और दिन बीत गए। अब तो उसकी रही सही ताकत भी खत्म हो गयी। वह चलने-फिरने के लायक भी नहीं रहा।

उसकी हालत बिलकुल मृत व्यक्ति की तरह हो चुकी थी। तभी एक महात्मा उधर से गुजरे और भिक्षुक के पास पहुंचे। उसने अपनी सारी कहानी महात्मा जी को सुनाई

**उस भिक्षुक का सौभाग्य था कि उसे उसकी गलती का अहसास कराने के लिए महात्मा जी मिल गए पर हमें खुद भी चौकन्ना रहना चाहिए कि कहीं हम शेर की जगह लोमड़ी तो नहीं बन रहे हैं।**

और बोला- 'अब आप ही बताइए कि भगवान् इतने निर्दयी कैसे हो सकते हैं, क्या किसी व्यक्ति को इस हालत में पहुंचाना पाप नहीं है?'

'बिल्कुल है' महात्माजी ने कहा- 'लेकिन तुम इतना मूर्ख कैसे हो सकते हो? तुम ये क्यों नहीं समझे कि भगवान् तुम्हें शेर की तरह बनते देखना चाहते थे, लोमड़ी की तरह नहीं !!!'

दोस्तो, हमारे जीवन में भी ऐसा कई बार होता है कि हमें चीजें जिस तरह समझनी चाहिएँ उसके विपरीत समझ लेते हैं। ईश्वर ने हम सभी के अन्दर कुछ न कुछ ऐसी शक्तियाँ दी हैं जो हमें महान बना सकती हैं, जरुरत हैं कि हम उन्हें पहचानें।

उस भिक्षुक का सौभाग्य था कि उसे उसकी गलती का अहसास कराने के लिए महात्मा जी मिल गए पर हमें खुद भी चौकन्ना रहना चाहिए कि कहीं हम शेर की जगह लोमड़ी तो नहीं बन रहे हैं।

## संकल्प का बल

अंग्रजी के एक प्रसिद्ध लेखक थे- चार्ल्स डिकेंस। वे पहले एक गोदाम में मजदूरी करते थे। उन्हें पढ़ने के साथ साथ लिखने का भी शौक था। वे रातों को लेख लिखते और चोरी छिपे अखबारों में छपने के लिए भेजते थे। उनके अधिकतर लेख प्रायः धन्यवाद सहित वापस आ जाते थे। उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और मेहनत मजदूरी के साथ साथ अपने अच्छे शौक के लिए समय निकालते रहे।

इसी बीच एक सम्पादक ने उनके पास पत्र लिखा- आप की रचनाएँ अच्छी हैं, आप भविष्य में अवश्य एक सफल लेखक बनेंगे। सम्पादक के इन शब्दों से चार्ल्स डिकेंस को नई शक्ति मिली। उनके संकल्प को बल मिला और वे लगातार लिखते रहे। एक दिन वे नोबेल पुरस्कार से सम्मानित हुए।

www.thearyasamaj.org



# वर वन्दनीय वेद की महिमा महान है।।

लेखक : प्रकाशचन्द्र कविरत्न

सर्वस्व आर्यों का सर्वगुण निधान है।
वर वंदनीय वेद की महिमा महान है।।
है ज्ञान कर्म भक्ति का उत्कृष्ट समन्वय।
रहता है सर्वकाल ये हो सृष्टि या प्रलय।।
निःश्रेयसाभ्युदय का है साधन ये असंशय।
फल चार का दाता है यही वेद चतुष्टय।।
यह तर्क युक्ति पूर्ण विज्ञानानुकूल है।
सब काल सभी को ये सौख्य शांतिमूल है।।
किञ्चित् न पक्षपात है सबके लिए समान।
रवि ज्योति ज्यों सबको समान करता है प्रदान।।
साहित्य सर्वमान्य वेद का पुनीत है।
किस्से न कहानी न गडरिये का गीत है।।
हीरा है सच्चा वह, तू कांच समझा है जिसे।
रे! देख वेद को तू वेद की ही दृष्टि से।।
मत दीपों में कहीं जो चमकते हैं दिव्य कण।
ज्योतित उन्हें है कर रही यह वेद-रवि किरण।।
मत पंथ अन्य जितने भी प्रचलित हैं ये नूतन।
पर वेद सर्वश्रेष्ठ सभी से है पुरातन।।
प्रत्यक्ष यहाँ सृष्टि का संवत् प्रमाण है।
वर वन्दनीय वेद की महिमा महान् है।।
आर्यों ने वेद के लिए बलिदान किए हैं।
हंसते हुए अति तीव्र गरल पान किए हैं।।
फांसी पे चढ़ गए प्रचण्ड अग्नि में जले।
कुचले गए ये हाथियों के पांव के तले।।
लोहे के गर्म चिमटों से तन खाल खिंचाई।
जिह्वा कटाई, आंख सलाखों से फुड़वाई।।
भालों, कृपाणों, वाणों से छिदवाए अंग-अंग।
जीवन के अन्त क्षण यही मन में रही उमंग।।
फिर जन्म लेंगे वेदों का उद्धार करेंगे।
अभिशाप, पाप, ताप, सकल जग के हरेंगे।।
हम आर्यों को वेद ही प्राणों का प्राण है।
वर वन्दनीय वेद की महिमा महान है।।
वेदों को मिटादे भला यह किसकी ताब है!
है ज्ञान ये अक्षय न कोई यह किताब है।।
पानी में वेदज्ञान कभी गल नहीं सकता।
वह वेद आग में भी कभी जल नहीं सकता।
वेदों के ग्रंथ हाँ! विधर्मियों ने जलाए।
हम्माम अपने गर्म कई मास कराए।।
पर मूढ़ पक्षपातियों ने ये भी न जाना।
ग्रंथों का जलाना नहीं वेदों का जलाना।।
वेदों की ऋचा वृक्षों पै वृक्षों के पत्तों पर।
फूलों पै फलों पर है वो चोटी पै जड़ों पर।
मानव समाज, पशु व पक्षियों के गात पर।
सागरतरंग, सरिता तटों, जल प्रपात पर।।
पर्वत व पर्वतों के गगनचुम्बी शिखर पर।
ब्रह्माण्ड के कण-कण पै भी हैं वेद के अक्षर।।
वह काल मिटाए हैं जिसने लोक बृहत्तर।
अक्षर अशुद्ध को ज्यों मिटा देता है रबर।।
वेदों को मिटा सकता न वो काल भयंकर।
अंकित है वेद की ऋचा उसके भी भाल पर।।
हाँ अमर ईश का ये अमर वेद ज्ञान है।
वर वन्दनीय वेद की महिमा महान है।।
है वेद की शिक्षा जियो औरों को जीने दो।
सुखशांति का प्याला पियो औरों को पीने दो।।
है ओतप्रोत सारे ही ब्रह्माण्ड में ईश्वर।
उसके हैं सब पदार्थ ये न भूल कभी नर।।
हाँ, त्याग भाव से सदा इनका प्रयोग कर।
लालच के वशीभूत हो परधन कभी न हर।।
मुख से भला कहो भला देखो भला सुनो।
हाँ, साध्य भले के लिए साधन भले चुनो।।
सब के विचार एक हों आचार एक हों।
होवे न परस्पर घृणा व्यवहार नेक हों।।
जीवन में ओतप्रोत ये वैदिक विचार हों।
निश्चय मनुष्यता का चतुर्दिक प्रसार हो।।
प्राणी समस्त विश्व के होंगे सुखी अभय।
बोलेंगे सभी प्रेम से वैदिक धर्म की जय।।
शिव सत्य सुन्दरम् 'प्रकाश' कवि का गान है।
वर वन्दनीय वेद की महिमा महान है।।

www.thearyasamaj.org

## वानप्रस्थ साधक आश्रम के ब्रह्मचारियों ने शास्त्रीय प्रतिस्पर्द्धा में जीते पदक

दिनांक 30.11.2012 से 02.12.2013 तक राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान दिल्ली के द्वारा शास्त्रीय स्पर्धा का आयोजन श्री भारती आश्रम जूनागढ़ में किया गया था। जिसमें वानप्रस्थ साधक आश्रम के स्वामी मुक्तानंद जी के सानिध्य में 4 ब्रह्मचारियों ने भाग लिया। इस स्पर्धा में चारों ब्रह्मचारी विजेता बने। दो ब्रह्मचारियों ने स्वर्ण पदक एवं दो ब्रह्मचारियों ने रजत पदक प्राप्त किया ।

## 65 यजमान दम्पतियों ने की पूर्णाहुति आर्यसमाज भरथना, इटावा के वार्षिकोत्सव में

**-सत्येन्द्र आर्य** मंत्री आर्यसमाज भरथना, इटावा

आर्यसमाज भरथना का 90 वां वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। 2 से 6 अक्टूबर तक वेद कथा का पंचदिवसीय कार्यक्रम रखा गया था। दिन में 2 सत्रों में प्रातः सायं यज्ञ भजन प्रवचन होते थे। यज्ञ के ब्रह्मा व मुख्य वक्ता होशंगाबाद मध्य प्रदेश के आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी जी थे, जिन्होंने अलग अलग सत्रों में वेद मन्त्रों तथा ऋषि ग्रंथों के आधार पर वैदिक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। 15 किलोमीटर दूर नवोदय विद्यालय के लगभग 550 छात्र-छात्राओं (जिनमें कुछ छात्र काश्मीर के भी है) के बीच उपदेश का विशेष कार्यक्रम रखा गया जिसका बहुत अच्छा प्रभाव रहा। अंतिम दिन 20 यज्ञ वेदियों पर 65 यजमान दम्पतियों द्वारा पूर्णाहुति का अभूतपूर्व दृश्य था। आर्यसमाज भरथना में प्रायः 4-5 यजमानों का ही यज्ञ होता था। इस बार आचार्यजी के आग्रह पर विशेष व्यवस्था की गई थी, जिससे वे लोग भी आये जो आज तक कभी आर्यसमाज आते ही नहीं थे। आर्यसमाज के प्रांगण में बैठने की जगह ही नहीं बची थी। सभी को आर्यसमाज मंदिर में प्रति रविवार आने व पञ्च महायज्ञों के करने का संकल्प दिलवाया गया। रात्रि में 12 बजे तक धर्म जिज्ञासु जन बैठे रहकर पूरा प्रवचन सुनते थे। नगर पालिका की अध्यक्षा श्रीमती रंजना यादव जी अपने पतिदेव श्री अजय यादव जी के साथ एक दिन यज्ञ में उपस्थित रहीं। स्वामी प्रभुवेश जी (औरैया) आचार्य श्री राजदेव जी गुरुकुल एरवा कटरा, पंडित संदीप वैदिक जी मधुर भजनोपदेशक, मुजफ्फरनगर, श्रीमती क्षमा पुरवार जी भजनोपदेशिका आदि विद्वान महानुभावों के सारगर्भित उपदेश भी अलग-अलग सभाओं में जनता जनार्दन को सुनने को मिले। आर्यसमाज की प्रधाना माता जी श्रीमती सीतादेवी आर्या जी ने सबका धन्यवाद किया।

## आर्य प्रतिनिधि सभा हि० प्र० का चुनाव

### रामफलसिंह आर्य महामंत्री चुने गए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के चुनाव गत दिवस सम्पन्न हो गए। चुनाव में श्री पी सी सूद प्रधान चुने गए। आर्य जगत् के प्रबुद्ध लेखक व वैदिक प्रवक्ता श्री रामफलसिंह आर्य को महामंत्री चुना गया। श्री नरेश काम्बोज को कोषाध्यक्ष का दायित्त्व मिला। सभी पदाधिकारियों को बधाई। परमात्मा आप सभी को अपने दायित्त्वों का निर्वहन करने की शक्ति प्रदान करे।

## आस सिविल लाइन्स अलीगढ़ का वार्षिकोत्सव संपन्न। 61 दम्पती हुए पूर्णाहुति में सम्मिलित

आर्यसमाज सिविल लाइन्स अलीगढ का चार दिनों का वार्षिकोत्सव 12 से 15 अक्टूबर तक संपन्न हो गया। यज्ञ के ब्रह्मा होशंगाबाद म० प्र० के आचार्य आनंद पुरुषार्थी प्रमुख वक्ता के रूप में आमंत्रित थे, जिन्होंने 8 सत्रों में चुने हुए वेद मन्त्रों, नीति के कुछ सूत्रों के आधार पर वैदिक सिद्धांतों की विस्तृत व्याख्या की। सायंकालीन सत्रों में आर्य पितृ-दिवस, आर्य मातृ-दिवस, आर्य युवक-दिवस, आर्य राष्ट्र-दिवस के नाम से किसी एक कर्मठ व्यक्तित्व को प्रशस्तिपत्र देकर सम्मानित किया गया। सभी उपदेशक महानुभावों ने तत्संबंधी व्याख्या की। आचार्य आनंद जी के आह्वान पर अंतिम दिन 21 यज्ञ वेदियों पर 61 यजमान दम्पतियों की श्रद्धापूर्वक उपस्थिति का ऐतिहासिक अभूतपूर्व नयनाभिराम दृश्य था। आर्यसमाज का पूरा पंडाल प्रातः 8 बजे से 12 बजे तक भरा रहा। सभी यजमानों को वैदिक धर्म से जुड़ने व व्यक्तिगत जीवन में आर्य-सिद्धान्तों को तरजीह देने की मार्मिक अपील पुरुषार्थी जी ने की। स्वामी स्वदेश जी अध्यक्ष उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ का भी संगठन शक्ति व ईश्वर विश्वास को लेकर ओजस्वी व्याख्यान एक दिन जनता को सुनने को मिला। अलीगढ़ जनपद के आर्यजन, गुरुकुल साधु आश्रम, नगर व ग्रामीण अंचल के सभी आर्यसमाजों से आये थे। श्री चेतनदेव वैश्वानर, आचार्य बुद्धदेव जी, श्री जीवन सिंह, डॉ० जय सिंह सरोज जी उत्तराखंड, देव नारायण भारद्वाज सहित अनेक विद्वानों का सान्निध्य जनता को मिला। श्रीमती कविता रानी जी व एटा के श्री शिवपाल आर्य जी के मधुर भजनोपदेश सभी सत्रों में प्रभावोत्पादक रहे। आर्यवीर दल के श्री पंकज आर्य व उनकी टीम तथा स्त्री आर्यसमाज की बहनों ने पूरा साथ दिया। समाज के डॉ० पपेन्द्र जी ने सभी का धन्यवाद किया। विद्वानों के भोज की व्यवस्था प्रतिसमय पृथक् 2 श्रद्धालु महानुभावों की तरफ से की गई थी। अंतिम दिन ऋषि लंगर का आयोजन सभी आर्यों के लिए आर्यसमाज की ओर से किया गया था।

www.thearyasamaj.org

शंकर शंभु – पृष्ठ २३ का शेष

आरम्भ में गुरुमंत्र से शिखाबंधन किया था। जैसे मार्जन मंत्रों में शिर से आरम्भ करके शिर ही पर समाप्ति करते हैं, इसी प्रकार यहाँ भी जहाँ से आरम्भ किया था, वहीं फिर पहुंच जाते हैं। अभिप्रायः यह है कि सारा चक्र समाप्त हो चुका है। पहली बार गायत्री द्वारा उपस्थान का आदर्श सामने रखा जाता है और अन्य मंत्रों से उसकी प्राप्ति के साधन प्रयुक्त किये जाते हैं। जब यम नियम तो क्या, उपस्थान भी हो चुका तब वस्तुतः अनुभव होता है कि हम 'सवितुर्देवस्य भर्गः' धारण कर रहे हैं। तीनों लोकों में से गुजर चुके। तीनों वेदों के मंत्रों का उच्चारण किया, तीनों प्रकार का प्राणायाम किया। कसर कौन सी रही? 'भूर्भुवः स्वः' बस सार्थ है। 'भर्गः' अपने अन्दर लेने का फल क्या? यही कि आत्मा में नई तथा उत्तम शक्ति का समावेश हुआ। चुम्बक से लगा हुआ लोहा कुछ समय चुम्बक का गुण धारण करता है। इसी प्रकार परमात्मा के सामीप्य से आत्मा भी वे गुण लेता है जो 'आपः देवी' में हैं। आगामी काल के लिए उसे सन्मार्ग में प्रेरणा होती है।

**नमस्कार मंत्र**

**ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च**
**नमः शङ्कराय च मयस्कराय च**
**नमः शिवाय च शिवतराय च।।** यजु० १६/४१

अर्थ – (शम्भवाय) कल्याणस्वरूप (मयोभवाय) सुखस्वरूप (शङ्कराय) कल्याणकारी (मयस्कराय) सुखकारी (शिवाय) आनन्द दाता (शिवतराय) अति आनन्ददाता ओ३म् के लिए (नमः) अनेक बार प्रणाम हो।।

समाधि से उठने से पूर्व परमात्मा को नमस्कार करते हैं। यह शिष्टाचार भी है, भक्ति भी। परमात्मा शंकर हैं, शंभु हैं, शिव हैं। अर्िात् प्रथम तो वह स्वयं शांति का भण्डार है, फिर जो उसकी शरण लेते हैं उन्हें त्रिविध तापों से शांत करता है। वही वास्तविक सुख का दाता है। कैसी उत्तम शिक्षा मिली? यदि शंकर बनना चाहो तो पहले शंभु बनो। जो स्वयं चिड़चिड़े हैं वे दूसरों का क्रोध नहीं हर सकते। जो स्वयं भयभीत हैं वे औरों के लिए अभय प्रदान क्या करेंगे? प१हले आप शांत बनों फिर औरों को शांति दो। परमात्मा व्रतपति है। उसके संसर्ग का फल यही है कि हम व्रतों से स्खलित न हों।

शांतिमय पितः! नमस्ते! हमारी बार बार नमस्ते!
ओ३म् शांतिः! शांतिः!! शांतिः!!!
हमें त्रिविध शांति प्रदान करो। (समाप्त)

ओ३म्
**M.A. : 9992025406**
**P. : 9728293962**
NDA No. : 236964
DL No. : 2064

# अशोका मैडिकल हॉल

**Pharmacist, आयुर्वेद रत्न**
**R.M.P.M.B.M.S.**

हमारे यहाँ पर नजला, पथरी, ल्यूकोरिया, शारीरिक कमजोरी, दाद, खारीश का आयुर्वेदिक देशी जड़ी बूटियों द्वारा ईलाज किया जाता है;

विशेष : हमारे यहाँ जीवन दायिनी च्यवनप्राश मिलता है।

**अशोका मैडिकल हाल नजदीक वैद्य रामचन्द्र हस्पताल, पटियाला चौक, जीन्द**

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

फोन : २५२६०६ (दु०)
९४१६५४५५३८ (मो०)

सत्यम् स्वर्णकार

हमारे यहाँ सोने व चांदी के जेवरात आर्डर पर तैयार किये जाते हैं।

प्रो. सत्यव्रत आर्य सुपुत्र रमेश चन्द्र आर्य

नजदीक सत्यनारायण मंदिर, सुनार मार्किट,
मेन बाजार, जीन्द (हरि०)–१२६१०२

ओ३म्

शांतिधर्मी के सदस्य बनने और शुल्क जमा कराने के लिए मिलें।

प्रकाश मेडिकल हाल

पटियाला चौक, जींद-126102
Regd. No. 108463

हर प्रकार की अंग्रेजी, देसी व आयुर्वेदिक दवाईयाँ
उचित मूल्य पर खरीदने के लिए पधारिए।

Dr. S.P.Saini
( B.Sc. D. Pharma, आयुर्वेद रत्न)

M- 93549 55283
92552 68315

सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक चन्द्रभानु आर्य द्वारा अपने स्वामित्व में, ऑटोमैटिक ऑफसैट प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६ १०२ (हरि०) से २४-११-२०१३ को प्रकाशित।

www.thearyasamaj.org

# अम्बाला के सनातन धर्म इंटर कॉलेज और सेंट्रल जेल में हुए सिद्धांत विषयक उपदेश

-कृष्ण कुमार, मंत्री आर्यसमाज 29 रामनगर अम्बाला छावनी

24 से 27 अक्टूबर तक आर्यसमाज रामनगर अम्बाला छावनी का 22 वां वार्षिकोत्सव सामवेद पारायण यज्ञ (आंशिक) के रूप में मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा होशंगाबाद मध्य प्रदेश के आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी थे जिन्होंने प्रतिदिन मन्त्रों की मार्मिक व्याख्या के माध्यम से वैदिक सिद्धांतों को स्पष्ट किया। वेदपाठी के रूप में सुयोग्य डॉ0 नरेश बत्रा जी; प्रधान आर्यसमाज एवं सुश्री प्रियंका आर्या जी थे, जो दोनों ही गुरुकुलों के स्नातक व सनातन धर्म डिग्री कालेज में संस्कृत के प्राध्यापक हैं। आप दोनों ही ने उच्चारण की शुद्धता का तो ध्यान रखा ही और जनता जनार्दन को आपके उपदेशामृत के पान करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। भजनोदेशक श्री संदीप वैदिक मुजफ्फरनगर ने सारगर्भित व्याख्या व मधुर भजनों से सभी का मन मोह लिया। प्रात: 6:30 से 9:30 व सायंकाल 4 से 7 तक यज्ञ भजन प्रवचन होते थे। पुरुषार्थी जी के आग्रह पर बाहर की संस्थाओ में सनातन धर्म इंटर कालेज एवं सेंट्रल जेल में उपदेश रखे गए, जिनका सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला। लगभग 25 आर्य सभासद साथ गए थे। इस जेल में 1300 कैदी हैं जिनमें 70 महिलाएं भी हैं। एक महिला ऐसी भी है जिनकी दया याचिका राष्ट्रपतिजी ने ख़ारिज कर दी है। उसने पति के साथ मिलकर अपने विधायक पिता, सगे भाई भाभी सहित 9 व्यक्तियों का कत्लेआम किया है। पुरुषार्थी जी ने कैदियों के प्रश्नों के उत्तर भी दिए। आर्यों को कैदियों की बैरक, भोजनालय, पुस्तकालय आदि देखने का अवसर प्राप्त हुआ। सत्यार्थप्रकाश भेंट की गई। आचार्य जी ने कैदियों से अपने बेटे बेटियों को गुरुकुलों में देने पर उनकी निशुल्क व्यवस्था का आश्वासन दिया।

अंतिम दिन पूर्णाहुति पर स्थानीय आर्यसमाजों से भी आर्य परिवार आये थे। स्कूल के बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम रखे गए थे। आर्य स्त्री समाज का योगदान न होता तो यह कार्यक्रम सफल होना कठिन था। मंत्री ने आर्यसमाज में एक कमरा बनाने हेतु 40 सीमेंट की बोरियों का आह्वान किया। श्रद्धालुओं ने तुरंत घोषणा करके उसकी पूर्ति कर दी। ऋषि लंगर में सभी ने प्रेम से भोजन किया।


**MAHARSHI DAYANAND EDUCATION INSTITUTE**

An Autonomous Institute Under the Control & Management of G.R.E.S.W. Society (Regd.) Bohal

202, OLD HOUSING BOARD, BHIWANI-127021 (HAR.)

**I.T.I. की इलैक्ट्रिशियन, फीटर, वैल्डर, पलम्बर, मशीनिस्ट आदि सभी ट्रेड व अन्य डिप्लोमा कोर्स दूरवर्ती माध्यम से करने के लिए व अपने क्षेत्र में संस्थान का केन्द्र स्थापित करने के सम्पर्क करें।**

**संस्थान से I.T.I. कोर्स किये अनेक विद्यार्थी सरकारी/गैर सरकारी विभागों में कार्यरत हैं।**

पंजीकृत कार्यालय सम्पर्क सूत्र :
09728004587, 09813804026
Website : www.grngo.org

सचिव : **नरेश सिहाग**, एडवोकेट
(पूर्व कानूनी सलाहकार, हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड)
चैम्बर नं. 175, जिला अदालत, भिवानी-127021 (हरि.)
09255115175, 09466532152

www.thearyasamaj.org

अन्ततः

# दीक्षान्त को गाऊन की गुलामी से मुक्त करें।

❑ डॉ0 वेदप्रताप वैदिक

वाराणसी के संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में एक अत्यंत प्रतिभाशाली स्नातक ने नया इतिहास बनाया। सुमनचंद्र पंत नामक इस स्नातक ने दीक्षांत समारोह के अवसर पर काला गाऊन पहनने से इंकार कर दिया। उसने कहा- मैं अपने धोती, कुर्ते और शॉल में ही अपनी उपाधि (साहित्याचार्य) ग्रहण करुँगा। गाऊन वगैरह गुलामी के प्रतीक हैं। अंग्रेजों के अवशेष हैं। इस पवित्र दीक्षांत के अवसर पर मैं उनको धारण नहीं करुँगा।

ज्यों ही राज्यपाल बी0 एल0 जोशी, उप-कुलपति विंदाप्रसाद मिश्र आदि मंच पर पहुंचे, अफसरों ने पंत से दुबारा आग्रह किया कि वह गाऊन पहने। पंत नहीं माने। उनकी देखादेखी कुछ अन्य स्नातकों ने भी गाउन का विरोध किया। इन सभी स्नातकों को विवि के अधिकारियों ने निकाल बाहर किया। उप-कुलपति का कहना है कि यह सब 'नाटक' था। ऐसे उपकुलपति को और वह भी संस्कृत विश्वविद्यालय के उपकुलपति को और संपूर्णानंदजी के नाम पर बने विश्व विद्यालय के उप-कुलपति को तो अविलंब बर्खास्त किया जाना चाहिए। इस विवि का उप-कुलपति तो संस्कृतज्ञ होना चाहिए लेकिन यह कैसे संस्कृतज्ञ हैं, जिसे भारत की परंपराओं का ज्ञान नहीं है? क्या उसे पता नहीं कि हमारे गुरुकुलों में दीक्षांत समारोह कैसे होते थे? इस विवि को तो अंग्रेजों की गुलामी छोड़ने और भारतीय परंपरा का समारंभ करने में अग्रणी होना चाहिए था लेकिन उसके छात्रों ने जो सही रास्ता दिखाया, उसे भी दुराग्रही अधिकारी मानने को तैयार नहीं हैं।

जिस छात्र सुमन पंत ने यह मांग की थी, उसे नौ स्वर्ण पदक मिल चुके हैं। पंत और उसके साथियों का वाराणसी में सार्वजनिक अभिनंदन आयोजित किया जाना चाहिए। विश्व विद्यालय का यह बहाना बिल्कुल

**राज्यपाल बी एल जोशी एक निष्ठावान संस्कृत प्रेमी हैं और स्वयं अत्यंत संस्कारवान व्यक्ति हैं। आश्चर्य है कि वे भी इस मामले में मौन रहे। हो सकता है कि उनके अफसरों ने इसे छोटा-मोटा मामला समझकर उन्हें कुछ बताया ही नहीं। लेकिन अब जोशीजी से उम्मीद की जाती है कि वे उप-कुलपति को फटकार लगाएँ और विश्व विद्यालय के कुलपति के नाते वे इन गाऊन विरोधी स्नातकों के लिए वाराणसी या लखनऊ राजभवन में विशेष दीक्षांत समारोह का आयोजन करें।**

असत्य है कि ऐन वक्त पर उठाई गई मांग को वह कैसे पूरा करता? वास्तव में पंत ने इस बारे में उ0प्र0 के राजभवन को काफी पहले लिख दिया था। जुलाई 2013 में एक अन्य स्नातक उमेशचंद्र शुक्ला ने भी राज्यपाल को लिख दिया था।

राज्यपाल बी एल जोशी एक निष्ठावान संस्कृत प्रेमी हैं और स्वयं अत्यंत संस्कारवान व्यक्ति हैं। आश्चर्य है कि वे भी इस मामले में मौन रहे। हो सकता है कि उनके अफसरों ने इसे छोटा-मोटा मामला समझकर उन्हें कुछ बताया ही नहीं। लेकिन अब जोशीजी से उम्मीद की जाती है कि वे उप-कुलपति को फटकार लगाएँ और विश्व विद्यालय के कुलपति के नाते वे इन गाऊन विरोधी स्नातकों के लिए वाराणसी या लखनऊ राजभवन में विशेष दीक्षांत समारोह का आयोजन करें।

दीक्षांत में गाऊन का विरोध केंद्रीय मंत्री जयराम रमेश भी कर चुके हैं। जरुरी यह है कि केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय (भ्रष्ट नाम-मानव संसाधन) समस्त राज्य सरकारों और सारे विश्वविद्यालयों को जरुरी निर्देश भेजें कि वे दीक्षांत समारोहों को इस गाऊन की गुलामी से मुक्त करें।

www.thearyasamaj.org


# आशीर्वाद

## न्यूरोसाइकेटरी व स्किन केयर सैन्टर

**गवर्नमैन्ट कॉलेज के सामने, निकट सामान्य हस्पताल, जीन्द**

## डॉ. प्राची शर्मा फौगाट

एम.बी.बी.एस., (पीजीआई रोहतक)
पी.जी.डी., एम.सी.
पी.जी.डी.एच.सी. (अपोलो हस्पताल)

## डॉ. विकास फौगाट

एम.बी.बी.एस.,
डी.पी.एम., डी.एन.बी., पी.जी.आई. रोहतक
पूर्व सीनियर रजिस्ट्रार, पी.जी.आई., रोहतक

**M.- 9812551145**

## SKIN & VD (SEX), COSMETOLOGY & LASER CLININ

## त्वचा, गुप्त रोग, कोसमेटोलोलोजी व लेजर क्लीनिक

### सुविधाएँ उपलब्ध :

- हर प्रकार के चर्म रोग का इलाज
- फलवैरी (Vitiligo)
- चेहरे का कालापन (Hyperpigmentation)
- स्किन एलर्जी (Allergy)
- बालो का झड़ना व अन्य रोग (Hair Fall)
- नाखुनों की बिमारी (Nail Disorder)
- मस्से व झाईयों का इलाज
- चेहरे पर मुहासे (Acne)
- Psorisis
- Dermabrsion
- Derma roller
- Radio Frequency/Electracutry
- Narrow Bond UVB Therapy
- Laser for Hyperpegmention
- Laser Hair Removel

## आज की बिमारी- महत्वपूर्ण जानकारी

1 सिर का भारी पन जैसे किसी ने सिर पर वजन रख दिया हो।
2 मन में गलत-गलत विचार आना
3 काम करने का मन न करना/किसी चीज में मोह न करना।
4 रात को गहरी नींद न आना तथा बुरे-बुरे सपने आना।
5 हर प्रकार के नशे जैसे (शराब, अफीम, सुलफा, समैक) का आधुनिक पद्धति से ईलाज
6 भूख कम लगना और खा लो तो अफारा आना या डकार आने लगना
7 रोने का दिल करना और बेचैन होना।
8 किसी काम में मन ना लगना, उदासी, नींद कम या ज्यादा आना, आत्म हत्या का विचार आना।
9 ज्यादा चिड़ चिड़ा होना, आत्म विश्वास में कमी बिना कारण रोना, निराश कमजोरी, सुस्ती, घबराहट, पशीना ज्यादा आना या सांस लेने में परेशानी होना, हाथ पैर ठण्डे होना, बार-बार पेशाब जाना।
10 बिना मतलब के विचार बार-बार मन में आना, रोकने पर भी न रूकना दरवाजे गैस, ताले आदिको बार-बार चैक करना व काम करने में अधिक समय लगाना।

### सुविधाएँ उपलब्ध :

- Psychosexual Clinic — सैक्स सम्बन्धित रोग
- Deaddication Clinic — नशामुक्ति क्लीनिक
- Headache Clinin — सभी प्रकार के सिरदर्द का इलाज
- Epilepsy Clinic — मिरगी के दौरे का ईलाज
- Child Guidance Clinic — बाल सुधार परामर्श
- Memory Clinic — कमजोर याददाश्त का ईलाज

**32 Channel EEG, BIOFEEDBACK, MECT, BRAIN MAPPING**

M-903411800, 9812308023, 9812308024, 9812308025

| Summer : | Winter : |
|---|---|
| Morning : 9:00 am to 2:00 pm | Morning : 10:00 am to 1:00 pm |
| Evening : 5:00 pm to 7:00 pm | Evening : 4:00 pm to 6:00 pm |

**सोमवार-शनिवार : गवर्नमैन्ट कॉलेज के सामने, नजदीक सामान्य हस्पताल, जीन्द**

बी. पी. एल. मरीजों का मुफ्त ईलाज। बी. पी. एल. मरीजों का मुफ्त ईलाज। बी. पी. एल. मरीजों का मुफ्त ईलाज। बी. पी. एल. मरीजों का मुफ्त ईलाज।

www.thearyasamaj.org



ओ३म्

# शांतिधर्मी एक अद्वितीय पत्रिका है

## इसमें परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिये स्वस्थ और सुरुचिपूर्ण सामग्री होती है।

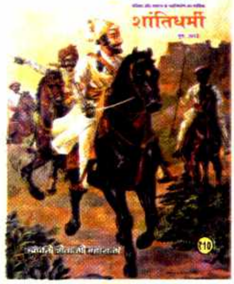


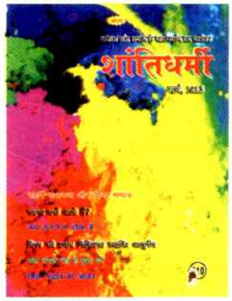


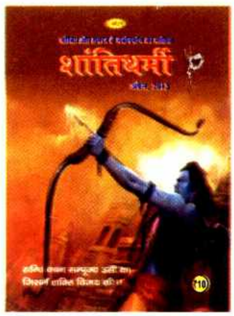


- **शांतिधर्मी** में धर्म-दर्शन के रहस्य, राष्ट्र व समाज की ज्वलंत समस्याओं पर अधिकारी विद्वानों के श्रेष्ठ विचार होते हैं।
- **शांतिधर्मी** भारतवर्ष के गौरवपूर्ण इतिहास की झलक दिखाता है।
- **शांतिधर्मी** वह मार्ग दिखाता है, जिसे पाने के लिये लोग भटक रहे हैं। परिवार में समाज में सह-अस्तित्व व अन्तरात्मा में सुख शांति का संदेशवाहक है।
- **शांतिधर्मी** उस अध्यात्म का प्रचार करता है-जिसे अपनाने में देश-काल, जाति, मजहब, सम्प्रदाय की सीमाएँ आड़े नहीं आतीं। यह सच्चे ईश्वरीय ज्ञान का प्रचारक है।
- **शांतिधर्मी** स्वाध्याय भी है और स्वस्थ मनोरंजन का साधन भी।
- **शांतिधर्मी** प्रत्येक श्रेष्ठ-धार्मिक-राष्ट्रप्रेमी-मानवतावादी-व्यक्ति के लिये एक विचार-सूत्र है। प्रत्येक श्रेष्ठ परिवार का आभूषण है।

### शांतिधर्मी पढ़िये-

अ[illegible] प्रति, [illegible]माज के प्रति, राष्ट्र के प्रति, ईश्वर के प्रति सर्वांगीण दायित्वों को जानिये।

जीवन के जटिल व गूढ़ रहस्यों को सहज ही सुलझाईये।

**शान्तिधर्मी कार्यालय**

756/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक)
जीन्द-126102 (हरियाणा)
मो. 09416253826 E-mail : shantidharmijind@gmail.com